इतिहास

आईएएस मुख्य परीक्षा

हल प्रश्न-पत्र

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

UPSC & STATE PSCs

इतिहास

प्रश्नोत्तर रूप में

आईएएस मुख्य परीक्षा अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र 2008-2023

1993–2007 अध्यायवार हल प्रश्न–पत्र

chronicleindia.in पर निःशुल्क उपलब्ध

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

इतिहास

प्रश्नोत्तर रूप में

आईएएस मुख्य परीक्षा अध्यायवार हल प्रश्न-पत्र 2008-2023

वर्ष 2008 से पूर्व के हल प्रश्न-पत्रों के अध्ययन हेतु आप chronicleindia.in पर विजिट कर सकते हैं; ये प्रश्न-पत्र पाठकों के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं।

यह पुस्तक संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के वैकल्पिक विषय के साथ-साथ राज्य लोक सेवा आयोगों की मुख्य परीक्षाओं तथा अन्य समकक्ष प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु भी समान रूप से उपयोगी है।

- पुस्तक में प्रश्नों के उत्तर को मॉडल हल के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रश्नों को हल करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि उत्तर सारगर्भित हों तथा पूछे गए प्रश्नों के अनुरूप हों।
- इस पुस्तक में प्रश्नों से संबंधित अन्य विशिष्ट जानकारियों को भी उत्तर में समाहित किया गया है, ताकि अभ्यर्थी इसका उपयोग न सिर्फ हल प्रश्न-पत्र के रूप में, बल्कि अध्ययन सामग्री के रूप में भी कर सकें।
- इस पुस्तक का उपयोग अभ्यर्थी अपनी उत्तर लेखन शैली में सुधार लाने तथा प्रश्नों की प्रवृत्ति व प्रकृति को समझने के लिए भी कर सकते हैं।

संपादकः एन. एन. ओझा

हलः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

अनुक्रमणिका

- **इतिहास मुख्य परीक्षा 2023 हल प्रश्न-पत्र-I 1-15**
- **इतिहास मुख्य परीक्षा 2023 हल प्रश्न-पत्र-II 16-32**

प्रथम प्रश्न–पत्र

- **मानचित्र..... 1-33**

1. **स्त्रोत..... 34-40**

पुरातात्विक स्त्रोतः
अन्वेषण, उत्खनन, पुरालेखविद्या, मुद्राशास्त्र, स्मारक
साहित्यिक स्त्रोतः

- स्वदेशी: प्राथमिक एवं द्वितीयक; कविता, विज्ञान साहित्य, क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य, धार्मिक साहित्य।
- विदेशी वर्णन : यूनानी, चीनी एवं अरब लेखक

2. **प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास..... 43-43**
   - भौगोलिक कारक, शिकार एवं संग्रहण (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण युग), कृषि का आरंभ (नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण युग)।

3. **सिंधु घाटी सभ्यता..... 44-51**
   - उद्गम, काल, विस्तार, विशेषताएं, पतन, अस्तित्व एवं महत्व, कला एवं स्थापत्य।

4. **महापाषाणयुगीन संस्कृतियां..... 52-53**
   - सिंधु से बाहर पशुचारण एवं कृषि संस्कृतियों का विस्तार, सामुदायिक जीवन का विकास, बस्तियां, कृषि का विकास, शिल्पकर्म, मृदभांड एवं लौह उद्योग।

5. **आर्य एवं वैदिक काल..... 54-60**
   - भारत में आर्यों का प्रसार।
   - वैदिक काल: धार्मिक एवं दार्शनिक साहित्य; ऋगवैदिक काल में उत्तर वैदिक काल तक हुए रूपांतरण; राजनैतिक; सामाजिक एवं आर्थिक जीवन; वैदिक युग का महत्व; राजतंत्र एवं वर्ग व्यवस्था का क्रम विकास।

6. **महाजनपद काल..... 61-65**
   - महाजनपदों का निर्माण : गणतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; नगर केंद्रों का उद्भव, व्यापार मार्ग, आर्थिक विकास, टंकण (सिक्का ढ़लाई), जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म का प्रसार, मगधों एवं नंदो का उद्भव
   - ईरानी एवं मकदूनियाई आक्रमण एवं उनके प्रभाव।

7. **मौर्य साम्राज्य..... 66-74**
   - मौर्य साम्राज्य की नीव, चंद्रगुप्त, कौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोक; धर्म की संकल्पना; धर्मादेश; राज व्यवस्था; प्रशासन; अर्थव्यवस्था; कला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्क, धर्म, धर्म का प्रसार; साहित्य साम्राज्य का विघटन; शुंग एवं कण्व।

8. **उत्तर मौर्य काल (भारत-यूनानी, शक, कुषाण, पश्चिमी क्षत्रप)..... 75-83**
   - बाहरी विश्व से संपर्क; नगर-केंद्रों का विकास, अर्थ-व्यवस्था, टंकण, धर्मों का विकास, महायान, सामाजिक दशाएं, कला, स्थापत्य, संस्कृति, साहित्य एवं विज्ञान।

9. **प्रारंभिक राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दकन एवं दक्षिण भारत में..... 84-89**
   - खारवेल, सातवाहन, संगमकालीन तमिल राज्य; प्रशासन, अर्थव्यवस्था, भूमि-अनुदान, टंकण, व्यापारिक श्रेणियां एवं नगर केंद्र; संगम साहित्य एवं संस्कृति, कला एवं स्थापत्य।

10. **गुप्त वंश, वाकाटक एवं वर्द्धन वंश..... 90-97**
    - राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, आर्थिक दशाएं, गुप्तकालीन टंकण, भूमि, अनुदान, नगर केंद्रों का पतन, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री की स्थिति, शिक्षा एवं शैक्षिक संस्थाएं, नालंदा, विक्रमशिला एवं बल्लभी, साहित्य, विज्ञान-साहित्य, कला एवं स्थापत्य।

11. गुप्तकालीन क्षेत्रीय राज्य 98–107

- कदंब वंश, पल्लव वंश, बादामी का चालुक्यवंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, व्यापारिक श्रेणियां, साहित्य; वैष्णव एवं शैव धर्मों का विकास, तमिल भक्ति आंदोलन, शंकराचार्य; वेदांत; मंदिर संस्थाएं एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, सेन वंश, राष्ट्रकूट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन, सांस्कृतिक पक्ष, सिंध के अरब विजेता; अलबरूनी, कल्याणी का चालुक्य वंश, चोल वंश; होयसल वंश, पांड्य वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशासन; स्थानीय शासन; कला एवं स्थापत्य का विकास, धार्मिक संप्रदाय; मंदिर एवं मठ संस्थाएं; अग्रहार वंश, शिक्षा एवं साहित्य; अर्थव्यवस्था एवं समाज।

12. प्रारंभिक भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के प्रतिपाद्य 108–113

- भाषाएं एवं मूलग्रंथ, कला एवं स्थापत्य के क्रम विकास के प्रमुख चरण, प्रमुख दार्शनिक चिंतक एवं शाखाएं, विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र के विचार।

13. प्रारंभिक मध्यकालीन भारत, 750-1200 114–121

- राज्य व्यवस्था: उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुख राजनैतिक घटनाक्रम, राजपूतों का उद्‌गम एवं उदय।
- चोल वंश : प्रशासन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं समाज
- भारतीय सामंतशाही
- कृषि अर्थव्यवस्था एवं नगरीय बस्तियां
- व्यापार एवं वाणिज्य
- समाज: ब्राह्मण की स्थिति एवं नई सामाजिक व्यवस्था स्त्रियों की स्थिति
- भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

14. भारत की सांस्कृतिक परंपरा, 750-1200 122–129

- दर्शन: शंकराचार्य एवं वेदांत, रामानुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्य एवं ब्रह्म-मीमांसा।
- धर्म: धर्म के स्वरूप एवं विशेषताएं, तमिल भक्ति, संप्रदाय, भक्ति का विकास, इस्लाम एवं भारत में इसका आगमन, सूफी मत।
- साहित्य: संस्कृत साहित्य, तमिल साहित्य का विकास, नवविकासशील भाषाओं का साहित्य, कल्हण की राजतरंगिणी, अलबरूनी का इंडिया।
- कला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रकला।

15. तेरहवीं शताब्दी 130–135

- दिल्ली सल्तनत की स्थापना : गोरी के आक्रमण, गोरी की सफलता के पीछे कारक
- आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिणाम
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना एवं प्रारंभिक तुर्क सुल्तान
- सुदृढ़ीकरण : इल्तुतमिश और बलबन का शासन।

16. चौदहवीं शताब्दी 136–142

- खिलजी क्रांति।
- अलाउद्दीन खिलजी: विज्ञान एवं क्षेत्र-प्रसार, कृषि एवं आर्थिक उपाय।
- मुहम्मद तुगलक: प्रमुख प्रकल्प, कृषि उपाय, मुहम्मद तुलगक की अफसरशाही।
- फिरोज तुगलक : कृषि उपाय, सिविल इंजीनियरी एवं लोक निर्माण में उपलब्धियां।
- दिल्ली सल्तनत का पतन, विदेशी संपर्क एवं इब्नबतूता का वर्णन।

17. तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी का समाज, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था 143–156

- समाज: ग्रामीण समाज की रचना; शासी वर्ग, नगर निवासी, स्त्री, धार्मिक वर्ग, सल्तनत के अंतर्गत जाति एवं दास प्रथा; भक्ति आंदोलन, सूफी आंदोलन।
- संस्कृति : फारसी साहित्य, उत्तर भारत की क्षेत्रीय भाषाओं का साहित्य; दक्षिण भारत की भाषाओं का साहित्य; सल्तनत स्थापत्य एवं नए स्थापत्य रूप, चित्रकला, सम्मिश्र संस्कृति का विकास।
- अर्थ व्यवस्था: कृषि उत्पादन, नगरीय अर्थव्यवस्था एवं कृषितर उत्पादन का उद्भव, व्यापार एवं वाणिज्य।

18. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी-राजनैतिक घटनाक्रम एवं अर्थव्यवस्था 157–164

- प्रांतीय राजवंशों का उदय: बंगाल, कश्मीर (जैनुल आबदीन), गुजरात, मालवा, बहमनी।
- विजयनगर साम्राज्य।
- लोदीवंश।
- मुगल साम्राज्य, पहला चरण, बाबर एवं हुमायूँ।
- सूर साम्राज्य, शेरशाह का प्रशासन
- पुर्तगाली औपनिवेशिक प्रतिष्ठान

19. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिक सोलहवीं शताब्दी : समाज एवं संस्कृति..... 165–168

- क्षेत्रीय सांस्कृतिक विशिष्टताएं।
- साहित्यिक परंपराएं।
- प्रांतीय स्थापत्य।
- विजयनगर साम्राज्य का समाज; संस्कृति, साहित्य और कला।

20. अकबर..... 169–174

- विजय एवं साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण।
- जागीर एवं मनसब व्यवस्था की स्थापना।
- राजपूत नीति।
- धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विकास, सुलह-ए-कुल का सिद्धांत एवं धार्मिक नीति।
- कला एवं प्रौद्योगिकी को राज-दरबारी संरक्षण।

21. सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य..... 175–182

- जहांगीर, शाहजहां एवं औरंगजेब की प्रमुख प्रशासनिक नीतियां
- साम्राज्य एवं जमींदार
- जहांगीर, शाहजहां एवं औरंगजेब की धार्मिक नीतियां
- मुगल राज्य का स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी का संकट एवं विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिक मराठा राज्य

22. सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थव्यवस्था एवं समाज..... 183–187

- जनसंख्या, कृषि उत्पादन, शिल्प उत्पादन
- नगर, डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी कंपनियों के माध्यम से यूरोप के साथ वाणिज्य, व्यापार क्रांति
- भारतीय व्यापारिक वर्ग, बैंकिंग, बीमा एवं ऋण प्रणालियां
- किसानों की दशा, स्त्रियों की दशा
- सिख समुदाय एवं खालसा पंथ का विकास

23. मुगल साम्राज्यकालीन संस्कृति..... 188–196

- फारसी इतिहास एवं अन्य साहित्य
- हिंदी एवं अन्य धार्मिक साहित्य
- मुगल स्थापत्य
- मुगल चित्रकला
- प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रकला
- शास्त्रीय संगीत
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

24. अठारहवीं शताब्दी..... 197–202

- मुगल साम्राज्य के पतन के कारक
- क्षेत्रीय सामंत देश, निजाम का दकन, बंगाल अवध
- पेशवा के अधीन मराठा उत्कर्ष,
- मराठा राजकोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
- अफगान शक्ति का उदय, पानीपत का युद्ध-1761
- ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्या में राजनीति, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था की स्थिति

द्वितीय प्रश्न–पत्र

1. भारत में यूरोप का प्रवेश..... 203–208

- प्रारंभिक यूरोपीय बस्तियां; पुर्तगाली एवं डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनियां; आधिपत्य के लिए उनके युद्ध; बंगाल-अंग्रेजों एवं बंगाल के नवाब के बीच संपर्क, सिराज और अंग्रेज; प्लासी का युद्ध; प्लासी का महत्व।

2. भारत में ब्रिटिश प्रसार..... 209–213

- बंगाल-मीर जाफर एवं मीर कासिम, बक्सर युद्ध; मैसूर, मराठा; तीन अंग्रेज-मराठा युद्ध; पंजाब

3. ब्रिटिश राज्य की प्रारंभिक संरचना..... 214–215

- प्रारंभिक प्रशासनिक संरचना; द्वैधशासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण तक; रेगुलेटिंग एक्ट (1773); पिट्स इंडिया एक्ट (1784); चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार का स्वर एवं ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का बदलता स्वरूप; अंग्रेजी उपयोगितावादी और भारत।

4. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव..... 216–234

क) ब्रिटिश भारत में भूमि-राजस्व, बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवारी बंदोबस्त; महलवाडी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध का आर्थिक प्रभाव; कृषि का वाणिज्यीकरण; भूमिहीन कृषि श्रमिकों का उदय; ग्रामीण समाज का परिक्षीणन।

ख) पारंपरिक व्यापार एवं वाणिज्य का विस्थापन; अनौद्योगीकरण; पारंपरिक शिल्प की अवनति; धन का अपवाह; भारत का आर्थिक रूपांतरण; टेलीग्राफ एवं डाक सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ग्रामीण भीतरी प्रदेश में दुर्भिक्ष एवं गरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसकी सीमाएं।

5. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास..... 235-236

➲ स्वदेशी शिक्षा की स्थित; इसका विस्थापन; प्राच्यविद्-आंग्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोकमत का उदय; आधुनिक मातृभाषा साहित्य का उदय; विज्ञान की प्रगति; भारत में क्रिश्चियन मिशनरी के कार्यकलाप।

6. बंगाल एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन..... 237-248

➲ राममोहन राय, ब्रह्म आंदोलन; देवेन्द्रनाथ टैगोर; ईश्वरचंद्र विद्यासागर; युवा बंगाल आंदोलन; दयानंद सरस्वती; भारत में सती, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिक सुधार आंदोलन; आधुनिक भारत के विकास में भारतीय पुनर्जागरण का योगदान; इस्लामी पुनरुद्धारवृत्ति-फराइजी एवं वहाबी आंदोलन।

7. ब्रिटिश शासन के प्रति भारत की अनुक्रिया:..... 249-254

➲ रंगपुर ढींग (1783), कोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841-1920), सन्थाल हुल (1855), नील विद्रोह (1859-60), दकन विप्लव (1875) एवं मुंडा उल्गुलान (1899-1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए किसान आंदोलन एवं जनजातीय विप्लव; 1857 का महाविद्रोह-उद्गम, स्वरूप, असफलता के कारण, परिणाम; पश्च 1857 काल में किसान विप्लव के स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 के दशकों में हुए किसान आंदोलन।

8. भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के कारक.... 255-267

➲ संघों की राजनीति; भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बुनियाद; कांग्रेस के जन्म के संबंध में सेफ्टी वाल्व का पक्ष; प्रारंभिक कांग्रेस के कार्यक्रम एवं लक्ष्य; प्रारंभिक कांग्रेस नेतृत्व की सामाजिक रचना; नरम दल एवं गरम दल; बंगाल का विभाजन (1905), बंगाल में स्वदेशी आंदोलन; स्वदेशी आंदोलन के आर्थिक एवं राजनैतिक परिप्रेक्ष्य; भारत में क्रांतिकारी उग्रपथ का आरंभ।

9. गांधी का उदय..... 268-275

➲ गांधी के राष्ट्रवाद का स्वरूप; गांधी का जनाकर्षण; रोलेट सत्याग्रह; खिलाफत आंदोलन; असहयोग आंदोलन समाप्त होने के बाद से सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ होने तक की राष्ट्रीय राजनीति; सविनय अवज्ञा आंदोलन के दो चरण; साइमन कमीशन; नेहरू रिपोर्ट; गोलमेज परिषद्, राष्ट्रवाद और किसान आंदोलन; राष्ट्रवाद एवं श्रमिक वर्ग आंदोलन; महिला एवं भारतीय युवा और भारतीय राजनीति में छात्र (1885-1947); 1937 का चुनाव तथा मंत्रालयों का गठन; क्रिप्स मिशन; भारत छोड़ो आंदोलन; वैवेल योजना; कैबिनेट मिशन

10. औपनिवेशिक..... 276-278

➲ भारत में 1958 और 1935 के बीच सांविधानिक घटनाक्रम।

11. राष्ट्रीय आंदोलन की अन्य कड़ियां..... 279-284

➲ क्रांतिकारी; बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र, यू.पी., मद्रास प्रदेश, भारत से बाहर, वामपंथ, कांग्रेस के अंदर का वाम पक्ष; जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, कांग्रेस समाजवादी पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, अन्य वामदल।

12. अलगाववाद की राजनीति.....285

➲ मुस्लिम लीग; हिन्दू महासभा; सांप्रदायिकता एवं विभाजन की राजनीति; सत्ता का हस्तांतरण; स्वतंत्रता।

13. एक राष्ट्र के रूप में सुदृढ़ीकरण..... 286-295

➲ नेहरू की विदेशी नीति; भारत और उसके पड़ोसी (1947-1964) राज्यों का भाषावाद पुनर्गठन (1935-1947); क्षेत्रीयतावाद एवं क्षेत्रीय असमानता; भारतीय रियासतों का एकीकरण; निर्वाचन की राजनीति में रियासतों के नरेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा का प्रश्न।

14. 1947 के बाद जाति एवं नृजातित्व..... 296-299

➲ उत्तर-औपनिवेशिक निर्वाचन-राजनीति में पिछड़ी जातियां एवं जनजातियां; दलित आंदोलन।

15. आर्थिक विकास एवं राजनैतिक परिवर्तन..... 300-303

➲ भूमि सुधार; योजना एवं ग्रामीण पुनर्रचना की राजनीति; उत्तर औपनिवेशिक भारत में पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नीति; विज्ञान की तरक्की।

16. प्रबोध एवं आधुनिक विचार..... 304-313

(i) प्रबोध के प्रमुख विचार; कांट, रूसो
(ii) उपनिवेशों में प्रबोध - प्रसार

(iii) समाजवादी विचारों का उदय (मार्क्स तक); मार्क्स के समाजवाद का प्रसार

17. आधुनिक राजनीति के मूल स्त्रोत.....314-325

(i) यूरोपीय राज्य प्रणाली
(ii) अमेरिकी क्रांति एवं संविधान
(iii) फ्रांसीसी क्रांति एवं उसके परिणाम, 1789-1815
(iv) अब्राहम लिंकन के संदर्भ के साथ अमेरिकी सिविल युद्ध एवं दासता का उन्मूलन।
(v) ब्रिटिश गणतंत्रात्मक राजनीति, 1815-1850; संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी, चार्टरवादी।

18. औद्योगीकरण.....326-333

(i) अंग्रेजी औद्योगिकी क्रांति: कारण एवं समाज पर प्रभाव
(ii) अन्य देशों में औद्योगीकरण; यू.एस.ए., जर्मनी, रूस, जापान
(iii) औद्योगीकरण एवं भूमंडलीकरण

19. राष्ट्र राज्य प्रणाली.....334-342

(i) 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद का उदय
(ii) राष्ट्रवाद: जर्मनी और इटली में राज्य निर्माण
(iii) पूरे विश्व में राष्ट्रीयता के आविर्भाव के समक्ष साम्राज्यों का विघटन

20. साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद.....343-355

(i) दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया
(ii) लातीनी अमेरिका एवं दक्षिण अफ्रीका
(iii) आस्ट्रेलिया
(iv) साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार: नव साम्राज्यवाद का उदय

21. क्रांति एवं प्रतिक्रांति.....356-372

(i) 19वीं शताब्दी यूरोपीय क्रांतियां
(ii) 1917-1921 की रूसी क्रांति
(iii) फासीवाद प्रतिक्रांति, इटली एवं जर्मनी
(iv) 1949 की चीनी क्रांति

22. विश्व युद्ध.....373-377

(i) संपूर्ण युद्ध के रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध: समाजीय निहितार्थ
(ii) प्रथम विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम
(iii) द्वितीय विश्व युद्ध : कारण एवं परिणाम

23. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का विश्व...378-394

(i) दो शक्तियों का आविर्भाव
(ii) तृतीय विश्व एवं गुटनिरपेक्षता का आविर्भाव
(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं वैश्विक विवाद

24. औपनिवेशिक शासन में मुक्ति.....395-401

(i) लातीनी अमेरिका-बोलीवर
(i) अरब विश्व-मिश्र
(iii) अफ्रीका-रंगभेद से गणतंत्र तक
(iv) दक्षिण पूर्व एशिया-वियतनाम

25. वि-औपनिवेशीकरण एवं अल्पविकास..402-408

विकास के बाधक कारक : लातीनी अमेरिका, अफ्रीका

26. यूरोप का एकीकरण.....409-411

(i) युद्धोत्तर स्थापनाएं NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी)
(ii) यूरोपीय समुदाय (यूरोपियन कम्युनिटी) का सुदृढ़ीकरण एवं प्रसार
(iii) यूरोपियाई संघ

27. सोवियत यूनियन का विघटन एवं एक ध्रुवीय विश्व का उदय.....412-416

(i) सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यूनियन को निपात तक पहुंचाने वाले कारक, 1985-1991
(ii) पूर्वी यूरोप में राजनैतिक परिवर्तन 1989-2001
(iii) शीत युद्ध का अंत एवं अकेली महाशक्ति के रूप में US का उत्कर्ष

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2023

इतिहास

(प्रथम प्रश्न-पत्र)

खंड-A

मानचित्र

प्र. आपको दिए गए मानचित्र पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिए एवं अपनी प्रश्न-सह उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग 30 शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(i) नवपाषाणकालीन स्थल

(ii) मां और शिशु की मृण्मूर्ति का स्थल

(iii) गुप्त मुद्रा निधि

(iv) वानस्पतिक अवशेष स्थल

(v) मिट्टी की ईंटों से बने प्लेटफार्म वाला हड़प्पा स्थल

(vi) मौर्य तडाग स्थल

(vii) मैत्रक वंश की राजधानी

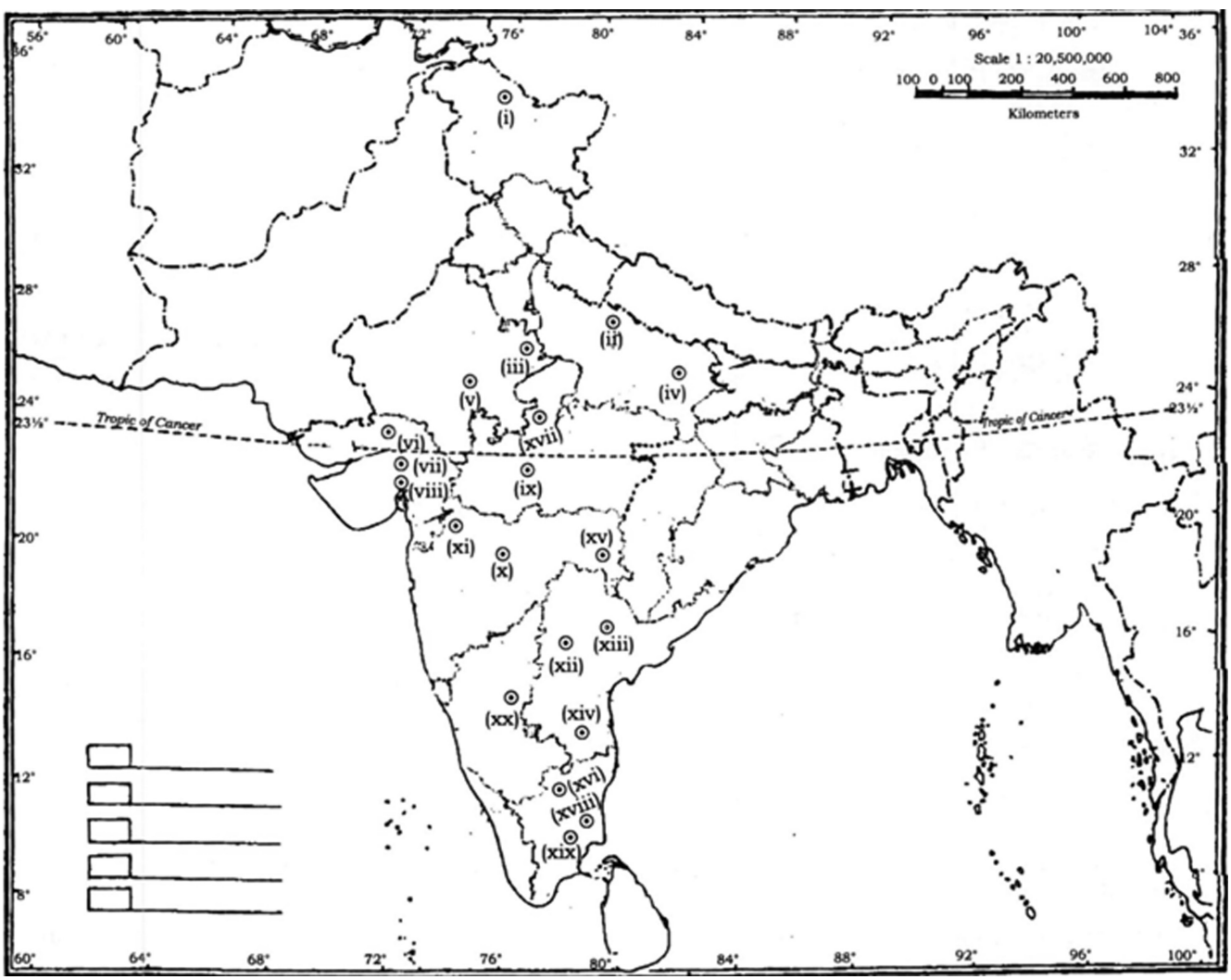

(viii) गोदीबाड़ा
(ix) शैलाश्रय
(x) पत्थर की कुल्हाड़ी का कारखाना
(xi) सातवाहन अभिलेख स्थल
(xii) अशोक का लघु शिलालेख
(xiii) बौद्ध स्तूप
(xiv) मध्यपाषाणकालीन स्थल
(xv) लोहा गलाने की कार्यशाला
(xvi) महापाषाणयुगीन स्थल
(xvii) सूर्य को समर्पित मंदिर स्थल
(xviii) रोमन कारखाना स्थल
(xix) मुवर कोइल (तीन मंदिर) स्थल
(xx) महापाषाण लौह स्थल

उत्तर: (i) नवपाषाणकालीन स्थल (बुर्जहोम): बुर्जहोम जम्मू-कश्मीर में स्थित एक नवपाषाणकालीन स्थल है। इस स्थल का उत्खनन वर्ष 1939 में किया गया था। यह श्रीनगर से 16 किमी उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। यहां से गर्तावास और कब्रों में मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहां के गोलाकार तथा अंडाकार गर्तावास ठंड से बचने के लिये होते थे। यहां से हमें हड्डियों के बने हुए तीर, सुइयां व दरातियां प्राप्त हुई है।

(ii) मां और शिशु की मृण्मूर्ति का स्थल (अहिच्छत्र): अहिच्छत्र में उत्खनन का कार्य स्वर्गीय राव बहादुर के. एन. दीक्षित के निर्देशन में 1940 से 1944 तक किया गया था, जहां मां और बच्चे की टेराकोटा आकृति प्राप्त हुई है। इस मृण्मूर्ति को इलाहाबाद (प्रयागराज) के संग्रहालय में रखा गया है। इसमें बच्चे को मां अपनी गोद में लिए हुए है। पुरातत्वविदों के अनुसार यह मूर्ति गुप्तकाल की है।

(iii) गुप्त मुद्रा निधि (बयाना): 17 फरवरी, 1946 को बयाना के नगला छैला/खोह से मिली स्वर्ण मुद्राओं को गुप्तकाल की सबसे बड़ी स्वर्ण मुद्रा निधि माना जाता है। इसकी खोज वर्ष 1946 में राजस्थान में बयाना के निकट ए. एस. अल्टेकर द्वारा की गई थी। इस भंडार से गुप्त शासकों द्वारा जारी किये गए लगभग 2000 सोने के सिक्के प्राप्त हुए हैं।

(iv) वानस्पतिक अवशेष स्थल (लहुरादेव): नवीनतम खोजों के आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप में प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिलें में स्थित लहुरादेव है। यहां से 8000 ई. पू. से 9000 ई. पू. मध्य के चावल के साक्ष्य प्राप्त हुए है। इस नवीनतम खोज के पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप का प्राचीनतम कृषि साक्ष्य वाला स्थल मेहरगढ़ (पाकिस्तान के बलूचिस्तान में स्थित यहां से 7000 ई. पू. के गेहूं के साक्ष्य मिले हैं)।

(v) मिट्टी की ईंटों से बने प्लेटफार्म वाला हड़प्पा स्थल (ओझियाना): ओझियाना आहड़ सभ्यता से संबंधित सबसे पुराना स्थल है। यह भीलवाड़ा शहर में स्थित है। इस स्थल की खुदाई बी. आर. मीणा और आलोक त्रिपाठी ने की थी। यहां पाए जाने वाले सफेद रंग के बैल को 'ओझियाना बैल' के नाम से जाना जाता है। इस साइट में जो उपकरण पाए गए थे, उनमें बैल और गाय की मिट्टी की मूर्तियां, पत्थर का हथौड़ा, शंख और तांबे की चूड़ियां और कारेलियन रॉक कट पत्थर थे।

(vi) मौर्य तडाग स्थल (सुदर्शन झील): सुदर्शन झील का निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में पश्चिम भारत के सौराष्ट्र के गिरिनगर स्थित गिरनार पर्वत की प्रान्तीय नदियों पर बांध बनाकर किया गया था। झील का निर्माण खेतों में सिंचाई आदि की सुविधा के लिए किया गया था। इस कृत्रिम जलाशय की मरम्मत 150 ई. में रुद्रदामन ने करायी थी। सम्राट अशोक के समय तुषास्प ने इस झील का पुनर्निर्माण कराया था।

(vii) मैत्रक वंश की राजधानी (वल्लभी): प्राचीन भारतीय शहर 'वल्लभी' 5वीं-8वीं शताब्दी में मैत्रक राजवंश की राजधानी था। यह पश्चिमी भारत के सौराष्ट्र (बाद में गुजरात) में भावनगर बंदरगाह के उत्तर-पश्चिम में खंभात (कैम्बे) की खाड़ी के प्रवेश द्वार पर स्थित था। वल्लभी ज्ञान का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था और यहां कई बौद्ध मठ भी थे। एक जैन परम्परा के अनुसार पांचवीं या छठी शताब्दी में दूसरी जैन परिषद वल्लभी में आयोजित की गई थी। इसी परिषद में जैन ग्रन्थों ने वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया था।

(viii) गोदीबाड़ा (लोथल): लोथल, सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के सबसे दक्षिणी स्थलों में से एक था, जो अब गुजरात राज्य के भाल क्षेत्र में स्थित है। माना जाता है कि यह बंदरगाह शहर 2,200 ईसा पूर्व में बनाया गया था। लोथल प्राचीन काल में एक व्यापार केंद्र था, जहां से मोतियों, रत्नों और गहनों का व्यापार पश्चिम एशिया तथा अफ्रीका तक किया जाता था। लोथल में विश्व का सबसे प्राचीन ज्ञात बंदरगाह था, जो इस शहर को सिंध के हड़प्पा शहरों और सौराष्ट्र प्रायद्वीप के बीच व्यापार मार्ग पर साबरमती नदी के प्राचीन मार्ग से जोड़ता था।

(ix) शैलाश्रय (भीमबेटका): भीमबेटका भारत के मध्य प्रदेश प्रान्त के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है। यह आदि-मानव द्वारा बनाये गए शैलचित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के समय का माना जाता है।

- यहां की दीवार, लघुस्तूप, भवन, शुंग-गुप्त कालीन अभिलेख, शंख अभिलेख और परमार कालीन मंदिर हजारों साल पुराने हैं। भीमबेटका का संबंध महाभारत के भीम से माना गया है। यहां की अधिकतर गुफाएं पांडव पुत्र भीम से संबंधित हैं।

(x) पत्थर की कुल्हाड़ी का कारखाना (नेवासा): नेवासा एक पुरास्थल है, जो महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में जिला मुख्यालय से उत्तर-पूर्व की ओर गोदावरी नदी की सहायक नदी प्रवरा के दोनों तटों पर स्थित है। इस स्थल को खोजने का श्रेय एम. एन. देशपाण्डे को जाता है। नेवासा में पुरापाषाण काल प्रस्तर उपकरण प्राप्त हुए हैं।

(xi) सातवाहन अभिलेख स्थल (पांडवलेनी गुफा, नासिक): सबसे पहले ज्ञात सातवाहन शिलालेखों में से एक नासिक जिले में पांडवलेनी गुफाओं की गुफा संख्या 19 में पाया गया था, जो कान्हा के शासनकाल (100-70 ईसा पूर्व) के दौरान जारी किया गया था।

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2023

इतिहास

(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

खंड-A

भारत में यूरोप का प्रवेश

प्र. कर्नाटक युद्धों, आंग्ल-मैसूर युद्धों और आंग्ल-मराठा युद्धों ने फ्रांस को दक्षिण भारत में वर्चस्व की प्रतिद्वंद्विता से वस्तुतः बाहर कर दिया। चर्चा कीजिए।

उत्तर: अंग्रेजी और फ्रांसीसी कंपनियां अपने व्यापारिक हितों के कारण अनिवार्य रूप से भारत की सत्ता पर अपना आधिपत्य जमाने में प्रयासरत हो गईं। मुगल केंद्रीय सत्ता के पतन के बाद, दक्कन के मुगल वायसराय अधीनस्थ अधिकारियों की सख्ती या मराठों के छापामार युद्ध के खिलाफ यूरोपीय कंपनियों के व्यापारिक हितों की रक्षा करने में असमर्थ थे।

इसलिए, यूरोपीय कंपनियां इस निष्कर्ष पर पहुंचीं कि उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए अपनी सेनाओं को विकसित करने की आवश्यकता है। ब्रिटिश और फ्रांसीसी दोनों कंपनियां अपने मुनाफे को अधिकतम करना चाहती थीं। उन्होंने सभी प्रतिस्पर्धा को कम करने और एकाधिकार नियंत्रण हासिल करने की मांग की।

प्रमुख बिंदु

कर्नाटक युद्धों, आंग्ल-मैसूर युद्धों और आंग्ल-मराठा युद्धों में ब्रिटिश और फ्रांसीसियों के बीच वर्चस्व के संघर्ष में अंग्रेज विजयी हुए। ब्रिटिश विजय के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे:

- उसी समय फ्रांसीसियों का ध्यान यूरोप में महाद्वीपीय विस्तार पर केंद्रित था, जिससे उनके संसाधन विभाजित हो गए।
- फ्रांसीसी सरकार निरंकुश थी, राजा पर निर्भर थी और सरकार की अंग्रेजी प्रणाली से कमजोर भी थी।
- फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी एक इकाई थी और इसे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की तरह पेशेवर ढंग से नहीं चलाया जाता था, जिसके शेयरधारक हमेशा कंपनी के वित्त पर ध्यान केंद्रित करते थे। इसके विपरीत, फ्रांस में शेयरधारकों को लाभांश की गारंटी दी जाती थी और फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी को कई अवसरों पर सब्सिडी देनी पड़ती थी।
- अंग्रेजों ने बंगाल के महत्व को पहचाना, जिसके संसाधनों का तीसरे कर्नाटक युद्ध में उदारतापूर्वक उपयोग किया गया। इसके विपरीत, हैदराबाद में फ्रांसीसी सेना को पर्याप्त लाभ नहीं मिला। वास्तव में, यह ठीक ही कहा गया है कि कोई भी सेनापति पांडिचेरी से शुरुआत करके और बंगाल पर कब्जा करने वाली शक्ति से मुकाबला करके भारत को नहीं जीत सकता था। इसी के साथ ब्रिटिश नौसेना अधिक श्रेष्ठ थी।
- काउंट डी लैली, जिसे एक महत्वपूर्ण समय पर भेजा गया था, उच्च स्तरीय नेतृत्व वाला और हिंसक स्वभाव का था। उसने फ्रांसीसी सेना को इस संघर्ष में विजयी बनाने हेतु कई निर्णय बहुत तेजी से लिए।
- भारत में आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष लगभग 20 वर्षों तक चला इसमें फ्रांसीसी सेना की हार हुई और इसके फलस्वरूप भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हुई।
- चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना ने 1799 में टीपू पर फ्रांसीसी मदद पहुंचने से पहले ही एक संक्षिप्त लेकिन भयंकर युद्ध आरंभ कर दिया और उसे हरा दिया।
- चौथे आंग्ल-मैसूर युद्ध का एक महत्वपूर्ण परिणाम भारत में ब्रिटिश वर्चस्व के लिए फ्रांसीसी खतरे का पूर्ण उन्मूलन था।

निष्कर्ष

- इस प्रकार, कर्नाटक युद्ध, एंग्लो-मैसूर युद्ध और एंग्लो-मराठा युद्धों ने दक्षिण भारत में वर्चस्व की लड़ाई को फ्रांसीसी मोर्चे से लगभग समाप्त कर दिया था।

ब्रिटिश राज्य की प्रारंभिक संरचना

प्र. भारतीय परिषद विधेयक, 1861 को प्रस्तुत करते हुए अंग्रेजों का मत था कि भारत के लिए एकमात्र उपयुक्त सरकार 'घर से नियंत्रित तानाशाही थी'। टिप्पणी कीजिए।

उत्तर: 1861 के भारतीय परिषद अधिनियम ने भारत में कार्यकारी परिषद प्रणाली में परिवर्तन लाया। इसे तत्कालीन वायसराय और गवर्नर-जनरल लॉर्ड कैनिंग द्वारा पेश किया गया था। अधिनियम ने एक पोर्टफोलियो प्रणाली को जन्म दिया और परिषद के भीतर विभाग बनाए।

- इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य अंग्रेजों द्वारा अपने कार्यों को जारी रखने के लिए भारतीयों से समर्थन प्राप्त करना था। भारतीय नागरिकों के साथ-साथ प्रेसीडेंसी द्वारा प्रतिनिधित्व की मांग बढ़ रही थी जिससे ब्रिटिश सरकार इस कानून को लागू करने के लिए तैयार हो गई।

प्रथम प्रश्न–पत्र

मानचित्र

प्रश्न: ***आपको दिए गए मानचित्र पर अंकित निम्नलिखित स्थानों की पहचान कीजिए एवं अपनी प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में उनमें से प्रत्येक पर लगभग शब्दों की संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। मानचित्र पर अंकित प्रत्येक के लिए स्थान-निर्धारण संकेत क्रमानुसार नीचे दिए गए हैं:***

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

(i) पुरापाषाणकालीन स्थल
(ii) शवाधान-युक्त मध्यपाषाणकालीन स्थल
(iii) नवपाषाणकालीन गर्तावास
(iv) प्रारम्भिक ग्रामीण बस्ती
(v) नवपाषाणकालीन स्थल
(vi) नवपाषाणकालीन-ताम्रपाषाणकालीन स्थल
(vii) हड़प्पन यूनेस्को स्थल
(viii) महापाषाणकालीन शवाधान स्थल
(ix) द्वितीय संगम का स्थल
(x) प्रारम्भिक सातवाहन राजधानी
(xi) अशोक का अभिलिखित प्रतिमा स्थल
(xii) प्रथम गुप्तकालीन मुद्रा-निधि
(xiii) धात्विक प्रतिमा-निधि
(xiv) प्राचीन बन्दरगाह
(xv) प्राचीनतम जेसुइट चर्च
(xvi) गान्धार कला-केन्द्र
(xvii) बौद्ध विहार
(xvii) प्रारम्भिक विष्णु मन्दिर स्थल
(xix) शैव एवं बौद्ध मन्दिर संकुल
(xx) प्रारम्भिक चौत्य गृह

1. पुरापाषाण स्थल (डीडवाना): डीडवाना राजस्थान के नागौर जिले का एक कस्बा है। यहां से पुरापाषाणकालीन पत्थर के औजार मिले हैं।

- डीडवाना का कोई संकलित इतिहास नहीं है, किन्तु यहां किए गए उत्खलन से पता चला है कि मानव जाति के पूर्वजों से सम्बंधित गतिविधियां यहां रही है।
- शहर के पास बांगड़ नहर के बहाव क्षेत्र में 700 मीटर चौड़े एवं 300 मीटर चौड़े दो रेतीले टीले मानव विकास के साक्षी रहे हैं।
- नागौर जिले का यह एकमात्र कस्बा है, जहां आदि मानव (होमो इरेक्टस और सेपियन्स), जीवाश्म, प्रागैतिहासिक और पाषाणकाल के अलावा गुप्त, प्रतिहार से लेकर मुगल काल तक की जानकारियां मिलती हैं।

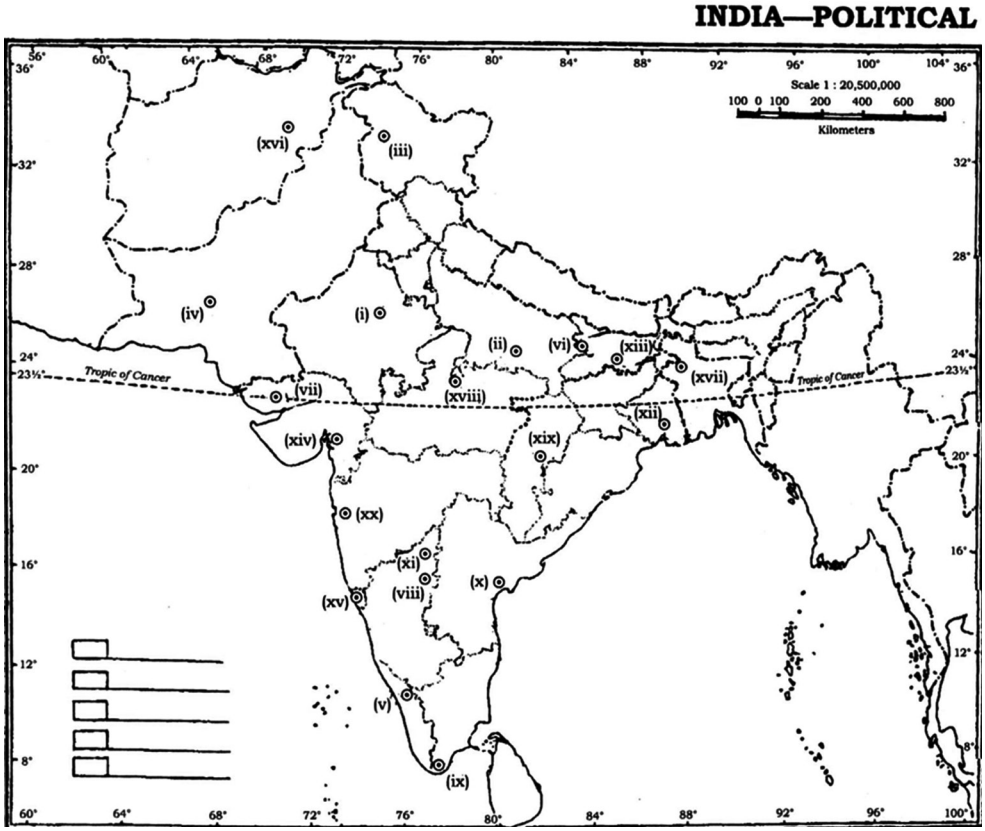

1

स्रोत : पुरातात्विक स्रोत

प्रश्न: ***प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में विदेशी विवरण के कुछ लाभ हो सकते हैं, परन्तु इनमें कतिपय कमियां भी थीं। उपयुक्त उदाहरणों का हवाला देते हुए इस कथन का परीक्षण कीजिए।*** **(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)**

उत्तर: प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के लिए भारत में आए विदेशी यात्रियों का वर्णन भी विशेष महत्त्वपूर्ण है। इन विदेशियों से भारत की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा नहीं की जा सकती। उनके वर्णन अधिकांशत: निष्पक्ष दिखाई देते हैं, किन्तु भारतीय समाज व उसकी भाषा की जानकारी न होने के कारण उन्होंने कुछ स्थानों पर कल्पित बातें भी लिखी हैं। कुल मिलाकर ये वृत्तान्त भारतीय इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। इन यात्रियों में (A) ईरानी, (B) यूनानी, (C) चीनी व (D) मुस्लिम यात्रियों के वृत्तान्त मिलते हैं, जो उस काल की भारत की परिस्थिति का सजीव चित्र उपस्थित करते हैं।

(A) **ईरानी यात्री**–जब भारत की समृद्धि की चर्चा पश्चिमी देशों में जोर-शोर से होने लगेगी तो ईरान के राजा ने ई. पूर्व छठी शताब्दी के प्रारम्भ में स्काईलैक्स नामक विद्वान को भारत भेजा, उसने सेना सहित भारत आकर यहां की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन किया। उसका भारत वृत्तान्त बड़ा रोचक है।

- इतना ही नहीं ईरान के सम्राट डेरियम ने भी भारत के बारे में लेख लिखे हैं। इन लेखों से भारत तथा ईरान के सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।
- भारतवासियों की युद्ध कला को व यहां की खेती का भी वर्णन उसके लेखों में विद्यमान है। ईरान के राजवैद्य टेशियस ने भी भारत का वर्णन किया है, किन्तु वह अधिक विश्वसनीय नहीं है।

(B) **यूनानी यात्री**–सिकन्दर के साथ आए विद्वानों के भारत वर्णन अधिक विश्वसनीय व उपयोगी हैं। इनमें नियार्कस (NEARCKUS) नामक एक जन सेनापति था, दूसरा विद्वान सह-नाविक एरिस्टोबुलस (ARISTOBULUS) था, जिसने अपनी वृद्धावस्था में अपनी यात्रा का वर्णन लिखा है, किन्तु उनके वृत्तान्त अब उपलब्ध नहीं हैं।

- सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात् उसके सेनापति सेल्युकस ने उसके पूर्वी साम्राज्य पर अधिकार कर लिया था। उसने भारत में मौर्य सम्राटों के दरबार में अपने राजदूत भेजे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित होकर उसने सन्धि कर ली और मेगस्थनीज (MEGASTHENES) को राजदूत बनाकर भेजा। वह लम्बे समय तक भारत में रहा और अपने ग्रन्थ 'इण्डिका' में भारत के शासन प्रबन्ध तथा भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रकाश डाला, यद्यपि अब यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है। किन्तु बाद के लेखकों–एरियन, अप्पियन (APPIAN), स्ट्रैबो व जस्टिन आदि ने मेगस्थनीज की पुस्तक से अनेक उद्धरण लिए हैं।
- एरियन के ग्रन्थों का ऐतिहासिक महत्त्व अधिक है। टॉलमी (PTOLOMY) ने भारत के भूगोल तथा प्लिनी ने पशुओं व वनस्पति का वर्णन किया है।

(C) **चीनी यात्री**–अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अनेक धर्म प्रचारक मध्य एशिया में भेजे। जहां से भारतीय संस्कृति व बौद्ध धर्म का प्रचार सम्पूर्ण चीन में हो गया और चीनी लोग भारत को बड़े आदर से धर्म भूमि समझने लगे। अपनी धार्मिक जिज्ञासा को शान्त करने तथा बौद्ध धर्म के साहित्य का अध्ययन करने के लिए अनेक चीनी यात्री भारत आए और वह लम्बे समय तक यहीं रहे। यद्यपि उनके वृत्तान्त अधिकांशत: धार्मिक हैं, किन्तु उनमें तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक स्थिति की भी जानकारी मिलती है। यद्यपि इन जानकारियों के ऐतिहासिक प्रमाण पर इतिहासकारों में विभेद है।

- चीनी यात्रियों में सर्वाधिक महत्त्व फाहियान, ह्वेनसांग तथा इत्सिंग का है। फाहियान के द्वारा चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल के भारत का वर्णन मिलता है। वह मूलत: धार्मिक वर्णन तक अपने को सीमित रखता है, फिर भी उसके वृत्तान्त का पर्याप्त ऐतिहासिक महत्त्व है।
- ह्वेनसांग सम्राट हर्ष के काल में भारत आया, लम्बे समय तक भारत में रहा। उसने धार्मिक वर्णन के साथ-साथ तत्कालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति का भी वर्णन किया है।
- इत्सिंग सातवीं शताब्दी में भारत आया और बहुत समय तक विक्रमशिला व नालन्दा विश्वविद्यालयों में अध्ययन करता रहा। उसने भी उस समय की सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का वर्णन किया है।
- तिब्बती लेखकों में लामातारा नाम प्रसिद्ध है। उनके ग्रन्थों 'कांग्युर' तथा 'तंग्युर' में भारत का वर्णन मिलता है।

2

प्रागैतिहास एवं आद्य इतिहास

प्रश्नः मध्य भारत और दक्कन में गैर-हड़प्पाकालीन ताम्रपाषाण संस्कृतियों का उदय न केवल लोगों की जीवन-निर्वाह की पद्धति में परिवर्तन का द्योतक है, वरन् प्राक् से आद्य ऐतिहासिक काल के समग्र संक्रमण का भी द्योतक है। समालोचनापूर्वक विश्लेषण कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2017)

उत्तरः नवपाषाण युग का अंत होते-होते धातुओं का इस्तेमाल शुरू हो गया। धातुओं में सबसे पहले तांबे का प्रयोग हुआ। कई संस्कृतियों का जन्म पत्थर और तांबे के उपकरणों का साथ-साथ प्रयोग करने के कारण हुआ। इन संस्कृतियों का ताम्रपाषाणिक (कैल्कोलिथिक) कहते हैं। ताम्रपाषाणिक अवस्था हड़प्पाकालीन अवस्था की अग्रगामी है क्योंकि इस संस्कृति के लोग तांबे और पत्थरों का साथ-साथ प्रयोग करते थे। इसके विपरीत हड़प्पाई लोग कांसे का प्रयोग करते थे। भारत में ताम्र पाषाण अवस्था की बस्तियां दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग, पश्चिम महाराष्ट्र तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में पाई गई हैं।

मध्य भारत में मालवा, कामथा एवं एरण बस्तियां प्रमुख हैं जबकि दक्कन क्षेत्र में जोरवे, नेवासा, दैमाबाद, चंदौली, सोनगांव, इनामगांव आदि बस्तियां अपना विशेष ताम्र पाषाणिक महत्व रखती है।

मध्य भारत और दक्कन में प्राप्त इन ताम्र पाषाणिक स्थलों को देखने पर हड़प्पा संस्कृति से स्पष्ट विभेद समझ में आता है। ताम्रपाषिक लोग पत्थर के छोटे-छोटे औजारों का हथियार के रूप में इस्तेमाल करते थे साथ ही विभिन्न प्रकार के मृद्भाण्डों एवं काले व लाल रंग के बर्तनों का प्रयोग भी करते थे।

दक्कन एवं मध्य क्षेत्र के मृदभाण्ड चित्रित हुआ करते थे। ये लोग पकी ईटों से परिचित नहीं थे। दूसरी जगह पत्थरों का प्रयोग इनके जीवन का हिस्सा था। ये लोग तांबे के कुशल शिल्पी प्रतीत होते हैं क्योंकि कई बस्तियों से तांबे के औजार, कंकण, चरखे और तकलियां आदि मिली हैं।

वास्तव में ताम्र पाषाणिक समाज व संस्कृति प्राक्र हड़प्पाई संस्कृति और आद्य एतिहासिक काल के मध्य की वह संक्रमण कालीन अवस्था है जिसके आधार पर आद्य जीवन सुगत व तकनीकि संपन्न बना। ताम्र पाषाणिक ग्रामीण जीवन, मैदानी एवं नदियों के समीप का जीवन व तकनीकि प्रधान जीवन उपर्युक्त बात का स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्नः भारत में नवपाषाण काल की प्रादेशिक विशिष्टताओं की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए और उनका कारण भी बताइए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2016)

उत्तरः भारत में अनेक नवपाषाणकालीन बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। सबसे पहला एवं स्पष्ट प्रमाण बोलन नदी के किनारे मेहरगढ़ (सिंध और बलूचिस्तान-पाकिस्तान) नामक स्थल से प्राप्त होता है। इस जगह पर लगभग 7000 ई. पू. ही कृषि उत्पादन आरंभ हो चुका था। यहां से 5000 ई. में ही गेहूं और जौ की विभिन्न प्रजातियों के उगाए जाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसी प्रकार बुर्जहोम (कश्मीर), राना घुंडई (बलूचिस्तान-पाकिस्तान), पिकलीहल, उतनूर, (आंध्र प्रदेश), किली गुल मोहम्मद (क्वेटा घाटी, पाकिस्तान), सराय खोला (रावलपिंडी, पाकिस्तान), पैयामपल्ली (तमिलनाडु), चिरांद (बिहार), मास्की, ब्रह्मगिरी, हलुर, कोडिकल, संगनकल्लू (कर्नाटक) आदि से नवपाषाणिक बस्तियों के अवशेष मिले हैं। कालीबंगा (राजस्थान), कोल्डीहवा (उत्तर प्रदेश) से कृषि के प्रमाण तथा असम और मेघालय से नवपाषाणिक उपकरण मिले हैं। इन सभी स्थलों में बलूचिस्तान तथा सिंघ की नवपाषाणिक संस्कृतियां विकसित थीं जिन्होंने ग्रामीण सभ्यता की स्थापना की तथा आगे चलकर हड़प्पा संस्कृति के शहरी स्वरूप को प्रभावित किया।

कश्मीर के बुर्जहोम की नवपाषाणिक संस्कृति उत्तर-पश्चिम जितनी विकसित नहीं थी। यहां से अंडाकार या वृत्ताकार गर्तगृह (Pits) के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थी। दीवारों में आले बने हुए थे।

प्रवेशद्वार के पास चूल्हे थे और चारदीवारी के पास स्तंभ-गर्त मिले हैं जिनसे छप्पर का संकेत मिलता है। यहां से हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तन तथा हड्डी के उपकरण (कांटा, आरी, बर्छी, सूई आदि) मिले हैं। प्रथम चरण में यहां की अर्थव्यवस्था आखेट एवं मछली के शिकार पर आश्रित थी परंतु नवपाषाण युग के दूसरे चरण से कृषि एवं पशुपालन के भी साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

दक्षिण में संगनकल्लू और पिकलीहल से पॉलिश किए गए प्रस्तर-उपकरण और मिट्टी के हस्तनिर्मित बर्तन मिले हैं साथ ही यहां से कृषि एवं पशुपालन के भी साक्ष्य मिले हैं। इसी प्रकार कोल्डीहवा (उत्तर प्रदेश) से चावल के प्रमाण मिले हैं। पूर्वी भारत में सबसे महत्वपूर्ण नवपाषाणिक स्थल चिरांद (छपरा, बिहार) है।

3

सिंधु घाटी सभ्यता

प्रश्नः *हड़प्पीय सभ्यता का नगरीय चरित्र न तो किसी बाहरी प्रभाव का परिणाम था और न ही कोई अचानक होने वाली घटना; अपितु यह स्थानीय सामाजिक-आर्थिक कारकों का क्रमिक विकास था। टिप्पणी कीजिए।*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः हड़प्पा सभ्यता तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुई। यह एक अत्यधिक विकसित सभ्यता थी जो अपने स्वरूप में शहरी प्रतीत होती है। उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य ने हड़प्पा के लोगों के सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक-पारिस्थितिकी और राजनीतिक जीवन को समझने में मदद की। हड़प्पा सभ्यता एक स्वदेशी सभ्यता थी। हड़प्पा सभ्यता किसी अचानक विकास का परिणाम नहीं थी, बल्कि वास्तव में, यह 3000 से अधिक वर्षों में फैले एक क्रमिक विकास की लंबी प्रक्रिया की परिणति का प्रतिनिधित्व करती थी।

- सिंधु घाटी सभ्यता को तीन चरणों में विभाजित किया गया था- प्रारंभिक हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा और उत्तर हड़प्पा।

हड़प्पा सभ्यता की अवधि

हड़प्पा सभ्यता को तीन प्रमुख चरणों में विभाजित किया गया है; प्रारंभिक, परिपक्व और उत्तर हड़प्पा।

- पुरातत्वविद प्राचीन सिंधु नगरों को पूर्ण विकसित सभ्यता मानते हैं। यह उनके सामाजिक पदानुक्रम, लेखन प्रणाली, बड़े पैमाने पर नियोजित बस्तियों और लंबी दूरी के व्यापार के कारण है।
- यह सिंधु घाटी परंपरा का एक हिस्सा है, जिसमें मेहरगढ़ की पूर्व-हड़प्पा बस्ती भी शामिल है।
- सिंधु घाटी में सबसे पुराना कृषि स्थल। पूर्व-हड़प्पा चरण भारत के लौह युग को चिह्नित करता है।

प्रारंभिक हड़प्पा काल

प्रारंभिक हड़प्पा चरण को रावी चरण के रूप में भी जाना जाता है। पास की रावी नदी के कारण नाम दिया गया था। यह लगभग 3300 ईसा पूर्व से 2800 ईसा पूर्व तक चला।

- यह तब शुरू हुआ जब पहाड़ों के किसान धीरे-धीरे अपने पहाड़ी घरों और तराई की नदी घाटियों के बीच चले गए।
- यह हाकरा चरण से संबंधित है, जिसे पश्चिम में घग्घर-हकरा नदी घाटी में पहचाना जाता है; यह कोट दीजी चरण (2800-2600 ईसा पूर्व), मोहनजोदड़ो के पास उत्तरी सिंध, पाकिस्तान में एक स्थल से पहले का है। पाकिस्तान के रहमान ढेरी और अमरी पुराने पुरवा संस्कृतियों के परिपक्व चरण के उदाहरण हैं।
- कोट दीजी परिपक्व हड़प्पा से पहले की अवधि को दर्शाता है, जिसमें किला केंद्रीकृत सरकार और जीवन के अधिक शहरीकृत तरीके का प्रतीक है।
- इस प्रारंभिक हड़प्पा चरण का एक और शहर कालीबंगन में भारत में हाकरा नदी पर खोजा गया था।
- व्यापार मार्ग ने इस संस्कृति को अन्य क्षेत्रीय संस्कृतियों और कच्चे माल के दूर के स्रोतों जैसे लापीस लाजुली और अन्य मनका बनाने वाली सामग्री से जोड़ा।
- इस स्थान पर, ग्रामीणों ने जल भैंस सहित विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों को पालतू बना लिया था।
- 2600 ईसा पूर्व में, प्रारंभिक हड़प्पा गांव विशाल शहरी केंद्रों में विकसित हुए, जो परिपक्व हड़प्पा काल की शुरुआत को चिह्नित करते हैं। हाल के एक अध्ययन से संकेत मिलता है कि सिंधु घाटी के निवासी गांवों से शहरों में स्थानांतरित हो गए।

परिपक्व हड़प्पा चरण

प्रारंभिक हड़प्पा काल से परिपक्व हड़प्पा काल तक का संक्रमण बड़ी दीवारों वाली बस्तियों के निर्माण, व्यापार नेटवर्क के विस्तार और मिट्टी के बर्तनों की शैलियों, आभूषणों के संदर्भ में 'अपेक्षाकृत समान' भौतिक संस्कृति में क्षेत्रीय समुदायों के बढ़ते एकीकरण द्वारा चिह्नित है। परिपक्व हड़प्पा चरण 2600 ईसा पूर्व में शुरू हुआ और 1900 ईसा पूर्व तक चला। सभ्यता की प्रकृति के कारण इसे परिपक्व कहा जाता है।

- हड़प्पा सभ्यता के इस युग में एक अच्छी तरह से विकसित शहर, जल निकासी प्रणाली, ईंटें, मुहरें, प्राधिकरण और शासन, व्यापार और वाणिज्य, कला और सांस्कृतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था आदि हैं।
- इस प्रकार, यह एक पूरी तरह से सभ्य शहर बना रहा है। इस युग की जल निकासी प्रणाली और नगर नियोजन अभी भी दुनिया के कुछ शहरों की आधुनिक जल निकासी व्यवस्था से बेहतर थी।
- 2600 ईसा पूर्व तक, प्रारंभिक हड़प्पा समुदाय शहरीकृत हो गए थे। इस तरह के शहरी केंद्रों में आधुनिक पाकिस्तान में हड़प्पा, गणेरीवाला, मोहनजोदड़ो और आधुनिक भारत में धौलावीरा, कालीबंगन, राखीगढ़ी, रोपड़ और लोथल शामिल हैं।

4 महापाषाणयुगीन संस्कृतियां

प्रश्न. क्या महापाषाण को एकल, समरूप अथवा समकालीन संस्कृति का प्रतिनिधि मानना उपयुक्त होगा? महापाषाण-कालीन संस्कृतियों से किस प्रकार के भौतिक जीवन व सांस्कृतिक व्यवस्था का पता चलता है?

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2021)

उत्तर: महापाषाण कालीन संस्कृति से तात्पर्य उस काल से है, जब मृतकों को आबादी क्षेत्र से दूर कब्रिस्तानों में पत्थरों के बीच दफनाया जाता था। दक्षिण भारत में इस प्रकार से मृतकों को दफनाने की परम्परा लौह युग के साथ आरम्भ हुई। इस महापाषाण कालीन संस्कृति की सूचना हमें उनकी यथार्थ बस्ती से कम तथा कब्रों से ज्यादा मिलती है।

इस युग की भौतिक संस्कृति बर्तनों, पत्थर के औजारों, ताम्र/कांस्य की वस्तुओं तथा अन्य वस्तुओं पर आधारित थी। प्रथम चरण (2500 से 1800 C.E.) के बर्तन मुख्यत: हाथ से बनाए गए सलेटी अथवा मटमैले भूरे होते थे। सलेटी बर्तनों की विशेषता बर्तनों को पकाने के बाद उन पर लाल गेरू से रंगाई करना थी। इन बर्तनों में से कुछ ऐसे हैं जिनके पाए खोखले तथा वृत्ताकार हैं जो कि हड़प्पा पूर्व आमरी तथा कालीबंगन में मिले बर्तनों की किस्मों से मिलते-जुलते हैं।

प्रथम चरण से संबंधित मृद्भाण्ड की एक अन्य किस्म में चमकाए हुए काले एवं लाल बाह्य भाग वाले बर्तन जो बैंगनी रंग से रंगे जाते थे, मिलते हैं। द्वितीय चरण (1800-1500 C.E.) में चमकाए हुए काली एवं लालधारी वाले बर्तनों का चलन समाप्त हो जाता है और एक अन्य किस्म सामने आती है। यह किस्म छिद्रित तथा टोटी वाले बर्तनों की है। मृद्भाण्ड तैयार करने में बाहरी भाग को खुरदरा बनाने की तकनीक अपनाई जाती थी जो कि हड़प्पा पूर्व ब्लूचिस्तान के इलाकों में सामान्य थी। तृतीय चरण (1400-1050 C.E.) में जो नए मृद्भाण्ड चलन में आए वे हैं:

1. सख्त ऊपरी भाग वाले सलेटी एवं धूसर मृद्भाण्ड।
2. चाक से बनाए गए बैंगनी रंग के बगैर चमकाए मृद्भाण्ड।

यह दूसरी किस्म के बर्तन महाराष्ट्र के जोर्वे किस्म से मिलते-जुलते हैं जो कि दक्षिणी दक्कन तथा उत्तरी दक्कन के बीच सांस्कृतिक संबंधों की ओर संकेत करता है। बर्तनों की किस्मों में विभिन्न प्रकार के प्याले (उड़ेलने के लिए विशिष्ट मुख वाले प्याले, टोंटी वाले प्याले, दस्ता लगे हुए तथा खोखले पाए वाले प्याले) जार, स्टैण्ड युक्त डोंगे तथा छिद्रित एवं टोंटी वाले बर्तन मिलते हैं। पत्थर के औजार तथा हड्डियों की शिल्पकृति-पत्थर के फलकों के उद्योग में लम्बे पतले, समानांतर दिशा वाले फलक, जिनमें से कुछ अतिरिक्त शिल्प कार्य के द्वारा अन्य रूप ले लेते थे, मिले हैं। सामानांतर दिशा वाले कुछ फलकों में काटने की धार पाई गई है।

कई पत्थर के औजारों पर पॉलिश की गई प्रतीत होती है। पॉलिश की गयी अथवा पत्थर की कुल्हाड़ी के उद्योग की सबसे सामान्य किस्म त्रिकोणीय कुल्हाड़ी है जिसका एक सिरा अंडाकार तथा दूसरा नुकीला है। अन्य किस्में हैं-बसुला, फाल, छेनी, रंदा तथा नुकीले औजार (जिन्हें कुदाल कहा गया है)। इनके अतिरिक्त पत्थर के अन्य औजार हैं-हथौड़े, फेंकने के पत्थर, पीसने वाले पत्थर, घिसाई के पत्थर तथा हस्तचलित चक्की। हस्तचलित चक्की खाद्य अनाज तैयार करने के काम आती थी।

हड्डियों के शिल्पकृति के शिल्पयुक्त हड्डियों, सींगें तथा प्राय: शाखायुक्त सींगें एवं सीप मिली हैं। सबसे सामान्य पुरावशेष नुकीले छेनी के उपकरणों का है, एक स्थान पर (पल्लावॉय) बैलों के कंधे की हड्डी को घिसकर तैयार की गयी हड्डियों की कुल्हाड़ी भी प्राप्त हुई है।

प्रश्न: महापाषाण संस्कृतियों के प्रसार, आवासीय प्रतिरुप एवं जीवन-यापन की विवेचना कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2012)

उत्तर: किसी भी संस्कृति का नामकरण उसके मूलभूत लक्षणों के आधार पर किया जाता है। लगभग 1100-1000 ई. पू. के लगभग दक्षिण भारत में एक नई प्रकार की संस्कृति का उद्भव हुआ। इस संस्कृति की सूचना हमें उनकी यथार्थ बस्तियों से कम तथा उनकी कब्रों से ज्यादा मिलती है।

इन कब्रों को महापाषाण कहा जाता है, क्योंकि इन्हें बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों से घेर दिया जाता था। इन्हीं मूलभूत लक्षणों के आधार पर इस संस्कृति का नाम महापाषाण संस्कृति रखा गया। महापाषण संस्कृति का प्रसार प्रायद्वीपीय भारत में पाया जाता है, लेकिन इसका जमाव पूर्वी आन्ध्र प्रदेश व तमिलनाडु में अधिक प्रतीत होता है। इसके साथ ही कर्नाटक के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रसार पाया जाता है।

काल क्रमानुसार महापाषण संस्कृति का प्रसार 1000 ई. पूर्व से माना जाता है। लेकिन कई मामलों में ईसा पूर्व पाँचवी सदी से लेकर ईसा पूर्व पहली सदी तक तथा कुछ मामलों में तो इसका प्रसार ईस्वी सन् की आरम्भिक सदियों तक मालूम पड़ता है।

5

आर्य एवं वैदिक काल

प्रश्नः क्या आप मानते हैं कि उपनिषदीय सिद्धांत वैदिक धार्मिक विचारों की उच्च स्थिति को मूर्त रूप देते हैं? टिप्पणी कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2021)

उत्तरः उपनिषद संस्कृत भाषा में लिखे भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं। इतिहास विदों के अनुसार ईशा पूर्व 500 से 800 वर्ष पहले उपनिषदों को लिखा गया था। उपनिषद वेदों मे दिए विषयों को दार्शनिक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। उपनिषदों में ईश्वर का अस्तित्व, जीव जगत का रहस्य, ईश्वर और जीव के बीच संबंधों को विस्तार से समझाने का प्रयास किया गया है।

- वैदिक साहित्य में आरण्यक ग्रंथों के बाद उपनिषद् ग्रंथों का क्रम आता है। उपनिषद के अविर्भाव से एक नये युग का सूत्रपात होता है। उपनिषद् वैदिक भावना के विकासरूप हैं। इसके अविर्भाव के कारण भारतीय साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए। इस युग में अनेक नये अन्वेषण, नये मान्यतायें और नये चिन्तन हुए।
- जीवन, जगत और ब्रह्म-विषयक से संबंधित अनेक गूढ़ रहस्यों से पर्दा उठा। हलांकि उपनिषद् में भी वेद से लिये गए मंत्रों को आधार माना गया, फिर भी वेदों और उपनिषदों में जीवन की शाश्वत मान्यताओं के प्रति अपने-अपने ढंग से विचार किया गया है। जन्म, मरण, सन्यास और वैरागय की भावनाओं का सूत्रपात उपनिषद् से ही आरम्भ होती है। यह वैदिक साहित्य का अंतीम भाग है। इसलिए इसे 'वेदांत' के नाम से भी जाना जाता है।
- उपनिषद् ग्रंथों में आत्मज्ञान, मोक्षज्ञान, और ब्रह्मज्ञान की प्रधानता होने के कारण इसको आत्मविद्या, मोक्षविद्या तथा ब्रह्मविद्या भी कहा जाता है।
- इसके अलावे इसमें धर्म के सूक्ष्म अतिसूक्ष्म स्वरूपों पर भी विचार प्रस्तुत किया गया है। क्योंकि इसके पूर्व वैदिक संहिताओं में धर्म को एकांगी, संकुचित और सर्वथा व्यक्तिगत रूप तक ही सीमित कर दिया गया था। इसलिए वाचस्पति गैरोला मानते हैं कि 'ब्राह्मण काल वैदिक धर्म की अवनति का और उपनिषद् काल वैदिक धर्म की चरमोन्नति का समय रहा है।' हर उपनिषद चार वेदों मे से किसी एक वेद का हिस्सा है और वेद के अंत में प्रकट होते हैं इसलिए उपनिषदों को वेदांत भी कहते हैं। उपनिषदों को वेदांत इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि सभी वेदों का सार यही उपनिषद है।
- उपनिषदों को श्रुति ग्रंथ भी कहा जाता है। श्रुति का अर्थ होता है सुनना। क्योंकि उपनिषदों के रचियता के नाम ज्ञात नहीं है। इसलिए ऐसा मानते हैं की यह ज्ञान गुरु शिष्य परम्परा से चला आ रहा है। ऐसा भी कहते हैं की उपनिषदों को पढ़ा नहीं जाता है।
- बल्कि गुरु के चरणों के समीप बैठ कर सुना जाता है। गुरु भी ऐसा जिसने उपनिषदों को केवल पढ़ा न हो बल्कि अनुभव किया हो। ऐसे गुरु के समीप बैठ कर उपनिषदों को सुनने से ब्रह्म ज्ञान का मार्ग सुलभ हो जाता है। इसलिए उपनिषदों को श्रुति ग्रंथ कहते हैं।
- उपनिषदों में ब्रह्म ज्ञान की विस्तार से चर्चा की गयी है। हर उपनिषद में एक गुरु-शिष्य के बीच एक संवाद स्थापित किया गया है।
- इस संवाद के जरिये प्रश्न और उत्तर शैली में जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर किया गया है। ईश्वर क्या है? मैं कौन हूँ? ब्रह्म कौन है? ईश्वर और जगत का क्या संबंध है? मृत्यु क्या है? जैसे प्रश्नों से शरू हुई ज्ञान साधक को उस परम सत्य के द्वार तक ले जाती है।
- जगत से सबंध स्थापित कर अपने अस्तित्व को खोजना और खुद को माध्यम बना कर उस परम शक्ति को खोजना यही उपनिषदों का महत्त्व है।

प्रश्नः वैदिक धर्म को पुनर्जीवित और लोकप्रिय बनाने में पुराण नवप्रवर्तनकारी साहित्यिक शैली थे। सोदाहरण विस्तार कीजिए। (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2020)

प्रश्न की मांगः वैदिक धर्म का वर्णन ऋग्वेद एवं अन्य तीन वेदों में मिलता है, परंतु समय के साथ-साथ अनेक सामाजिक सांस्कृतिक एवं भाषाई परिवर्तन आए जिससे तत्कालीन विद्वानों द्वारा इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए पुराण साहित्य की रचना की गई, जिसे वैदिक और लौकिक साहित्य की कड़ी भी कहा जाता है।

उत्तरः वैदिक सभ्यता (1500 ई.पू.-1000 ई.पू.) का मूल वैदिक धर्म रहा है जिसका वर्णन ऋग्वेद में मिलता है। परंतु यह विशेष रूप से स्मरणीय है कि यह समाज स्थिर नहीं बल्कि गतिशील था। इस दौरान समाज का लगातार विकास हो रहा था और आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में नए-नए तत्व सामाजिक संरचना को रूपांतरित कर रहे थे।

6

महाजनपद काल

प्रश्नः प्राचीन भारत में तंत्रवाद के परिवर्तनशील प्रतिरूप को सोदाहरण रेखांकित एवं अभिनिर्धारित कीजिए।
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2020)

प्रश्न की मांगः प्राचीन भारत में अनेक संप्रदायों में प्रचलित तंत्रवाद के बदलते स्वरूप को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करना है।

उत्तरः प्राचीन भारत में ऐसी धार्मिक क्रियाएं जिनकी उत्पत्ति गैर आर्य कबीलाई लोगों की अति प्राचीन प्रजनन संस्कारों से हुई थी, उनको बाद में तंत्रवाद के नाम से जाना गया। इसने न केवल अन्य समकालीन संप्रदायों - जैन, बौद्ध, वैष्णव इत्यादि को प्रभावित किया बल्कि इसका उद्‌भव उन संप्रदायों के लिए चुनौती एवं प्रतिक्रिया के रूप में हुआ, जिनके अंतर्गत निहित स्वार्थ उत्पन्न हो गए थे और जो प्रारंभिक मध्यकाल के आते-आते व्यवस्था का एक अंग बन गए।

तंत्रवाद का स्वरूपः तंत्रवाद में देवियों या देवी माता का महत्व था। इसका कारण यह था कि सभी कबीलियाई क्षेत्रों में देवी शक्ति या देवी माता के संप्रदाय का लोकप्रिय प्रचलन था। इन कबीलाई देवियों का प्रवेश ब्राह्मणवादी धर्म में शक्ति के रूप में बौद्ध धर्म में तारा और जैन धर्म में बहु संख्यक यक्षिणियों के रूप में हुआ। प्रारंभिक मध्यकाल का प्राकृत भाषा का ग्रंथ गौडवाह काली एवं पार्वती देवियों को कोल एवं सबर कबीलों से संबंधित करता है। शक्ति मातंगी और चंडाली नामों से भी जानी जाती है। गुप्त काल के अंत तक विभिन्न कबिले की देवियों का उच्च संप्रदायों में मिलन हो गया। इसी के साथ - साथ जादू वाले संस्कारों और पशु बलि की एक नई रीति भी सम्मिलित हुई। तंत्रवाद का एक धर्म के रूप में उदय छठी सदी ईस्वी में हुआ और नौंवी सदी में एक शक्तिशाली मत बन गया।

इस वास्तविकता के बावजूद प्रारंभिक मध्यकाल में तंत्रवाद अपने मूल चरित्र को खो चुका था और इसे भी राजाओं, अधिकारियों और उन उच्च वर्गों के द्वारा जिन्होंने इसका संस्कृतिकरण किया, ने संरक्षण प्रदान किया परंतु फिर भी तंत्रवाद संगठित और औपचारिक संरक्षण प्राप्त, ब्राह्मणवादी धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म के लिए एक चुनौती बना रहा।

तंत्रवाद के पुरोहितों ने ब्राह्मणवादी धर्म के दीक्षा वाले संस्कारों को भी चुनौती दी। अगर ब्राह्मणों ने अपनी सर्वोच्चता का दावा वैदिक अनुष्ठानों तथा यौवन योग क्रियाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस प्रकार तंत्रवाद ने समाज में निम्न स्थान प्रदान किया था, महत्वपूर्ण सामाजिक लक्ष्य की सेवा की। तांत्रिक पुरोहितों ने अनेक अनुष्ठानों पर अपने स्वामित्व का दावा किया, जैसे कि वे गूढ़ क्रियाओं और जड़ी बूटियों से न केवल सांप के काटने कीड़ों मकोड़ों के काटने और अन्य बीमारियों का इलाज करते थे बल्कि उन्होंने भूत प्रेतों एवं ग्रहों के बुरे प्रभावों को भी दूर करने वाले अनुष्ठानों को संपन्न करने का काम किया। इस प्रकार प्रारंभिक मध्यकाल के दौरान तांत्रिक पुरोहितों ने एक पुरोहित, चिकित्सक, ज्योतिषि एवं पशमन का कार्य किया।

निष्कर्ष

प्राचीन काल में तंत्रवाद ने बौद्ध, जैन और ब्राह्मण विचार धाराओं में प्रवेश किया। महायान मत ने तो दक्षिण भारत के क्षेत्रों में तांत्रिक प्रक्रियाओं को धारण करते हुए वज्रयान मत के रूप में विकसित कर लिया। आंध्र और कलिंग प्रदेशों में तीसरी सदी ईस्वी में लिखे जाने वाले अनेक तांत्रिक ग्रंथों ने वंगा और मगध में तंत्रवाद का प्रसार किया और पाल शासकों के शासन काल में मगध क्षेत्र नालंदा तांत्रिक अध्ययन के केंद्र के रूप में विकसित हुआ। वज्रयान तांत्रिक साहित्य इतना विशाल है कि तिब्बत भाषा में जो साहित्य पाया गया है, उसकी नाममात्र की सारिणी तीन खंडों में संकलित हो गई। जैन तांत्रिक ग्रंथों में भी जादूई और आश्चर्यचकित तत्वों को शामिल किया गया, तथा उनके पद्मावति, अंबिका, सिद्धायिका और ज्वालामालिनी जैसी यक्षियों के संप्रदाय की भी महिमा की गई।

प्रश्नः गण-संघों (गैर-राजतंत्रीय राज्य प्रणालियां) का विवरण प्रस्तुत कीजिए। उनका पतन किस कारण हुआ था?
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2018)

उत्तरः छठी शताब्दी ई.पू. में जिन प्रमुख महाजनपदों का उल्लेख मिलता है, उनके अतिरिक्त भी कुछ राज्य थे। इन राज्यों का प्रशासन गणतंत्रीय व्यवस्था पर आश्रित था। पालि-साहित्य में दस राजतंत्रों एवं उनकी प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। इस समय के गणराज्यों में कपिलवस्तु के शास्त्र, रामग्राम के कोलिय, पावा एवं कुशीनगर के मल्ल, मिथिला के विदेह, पिप्पलीवन के मोरिय, सुसुंमार के मन्ख, अल्पवाप्प के बुलि, केसपुत के कलाम तथा वैशाली के लिच्छवियों का उल्लेख पालि-साहित्य में मिलता है।

इनमें सबसे प्रमुख शाक्य और लिच्छवि थे। ये गणतंत्र सिंधु नदी की द्रोणी एंव हिमालय की तलहटी में स्थिति थे। इनमें अधिकांश जगहों पर पहले राजतंत्र था, परंतु बाद में वहां गणतंत्र की स्थापना हुई।

7

मौर्य साम्राज्य

प्रश्नः *अशोक के धम्म का प्रचार-प्रसार न केवल नैतिक उत्थान और सामाजिक समरसता के लिए, अपितु राज्य की शक्ति के विस्तार के लिए भी किया गया था। इस कथन का विश्लेषण कीजिए।* **(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)**

उत्तरः अशोक की धम्म नीति केवल गूढ़ वाक्यों पर ही समाप्त नहीं होती थी। उसने इसे राज्यगत नीति के रूप में अपनाने का भरसक प्रयास भी किया। उसने घोषणा की "सभी जन मेरी संतान हैं" तथा "मैं जो भी कार्य करता हूं, वह केवल उस ऋण को उतारने का प्रयास है तो सभी जीवों का मुझ पर है"। यह सर्वथा नया तथा शासन व्यवस्था का उत्साहवर्द्धक आदर्श था। अर्थशास्त्र के अनुसार राजा पर किसी का ऋण नहीं होता। उसका एकमात्र कार्य राज्य पर सक्षम शासन करना है।

अशोक ने युद्ध तथा हिंसात्मक विजयों की निंदा की तथा पशुओं की अधिक हत्या पर प्रतिबंध लगा दिया। स्वयं अशोक ने राजपरिवार में मांस खाने की परंपरा लगभग समाप्त करके शाकाहार का उदाहरण प्रस्तुत किया। चूंकि वह, प्रेम एवं विश्वास द्वारा विश्व विजय प्राप्त करना चाहता था, इसलिए उसने धम्म के प्रचार के लिए दल भेजे। इस प्रकार के दल मिस्र, यूनान, श्रीलंका आदि दूरस्थ स्थानों पर भेजे गए।

- धम्म के प्रचार में जन-कल्याण के कई कार्य सम्मिलित थे। मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सालय साम्राज्य के अंदर तथा साम्राज्य के बाहर दोनों ही स्थानों पर बनाए गए। छायादार कुंज, कुएं, फल के बगीचे, विश्रामगृह आदि बनाए गए।
- इस प्रकार के कल्याणकारी कार्य अर्थशास्त्र में वर्णित राजाओं की तुलना में, जो कि अधिक राजस्व प्राप्त करने की संभावना के बिना एक पैसा भी खर्च नहीं करते थे, मूल रूप से भिन्न विचारधारा के थे।
- अशोक ने व्यर्थ बलि चढ़ाने की परंपरा तथा ऐसे समारोह जिनके कारण व्यय, अनुशासनहीनता तथा अंधविश्वास पैदा होता था, पर प्रतिबंध लगा दिया। इन नीतियों के कार्यान्वयन के लिए उसने धम्म महामात्रों की नियुक्तियां की।
- इन धम्म महामात्रों का एक कार्य यह भी था कि वे इसका ध्यान रखे कि सभी संप्रदाय के लोगों के साथ उचित व्यवहार हो रहा हो। उन्हें बन्दियों के कल्याण के प्रति विशिष्ट दायित्व सौंपा गया था। बहुत सारे बंदी जो कि कारावास की अवधि समाप्त होने के पश्चात् बेड़ियों में रखे गए थे, उन्हें मुक्त करने का आदेश दिया गया था। मृत्यु दंड प्राप्त बन्दियों को तीन दिन का जीवनदान दिए जाने का आदेश था।
- स्वयं अशोक ने धम्म यात्राएं आरंभ की। वह तथा उसके साथ के उच्च अधिकारी धम्म के प्रचार तथा जनता के साथ सीधा संपर्क बनाने के लिए देश भ्रमण पर निकले। अपनी इसी नीति के कारण अशोक को कर्न (KERN) जैसे आधुनिक लेखक ने राजा की पोशाक में भिक्षु कहा है।

निष्कर्ष

धम्म की नीति के विषय में हमारी जानकारी के स्रोत अशोक के अभिलेख हैं। अशोक ने अपनी धम्म की नीति के अंतर्गत अहिंसा, सहिष्णुता तथा सामाजिक दायित्व का उपदेश दिया। उसने इन सिद्धान्तों का पालन अपनी प्रशासनिक नीति में भी किया। धम्म एवं बौद्ध मत को एकरूपी नहीं मानना चाहिए।

प्रश्नः *बौद्ध धर्म के कुछ विचारों की उत्पत्ति भले ही वैदिक-उपनिषदीय परम्परा में रही हो, परन्तु अपने विशिष्ट सिद्धांत और संस्थाओं के साथ यह पूर्ण रूप से एक नया धर्म था। विवेचना कीजिए।*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही प्राचीन धर्म हैं और दोनों का ही उदय और विकास भारतभूमि पर ही हुआ है। हिन्दू धर्म के वैष्णव संप्रदाय में गौतम बुद्ध को दसवां अवतार माना गया है, हालांकि बौद्ध धर्म इस मत को स्वीकार नहीं करता।

- बौद्धधर्म भारतीय विचारधारा के सर्वाधिक विकसित रूपों में से एक है और हिन्दूमत (सनातन धर्म) से साम्य रखता है। हिन्दूमत के दस लक्षणों यथा दया, क्षमा अपरिग्रह आदि बौद्धमत से मिलते-जुलते हैं। यदि हिन्दूमत में मूर्ति पूजा का प्रचलन है तो बौद्ध मन्दिर भी मूर्तियों से भरे पड़े हैं।
- प्रसिद्ध अंग्रेज यात्री डॉ. डी.एल. स्नेलगोव ने अपनी पुस्तक 'द बुद्धिस्ट हिमालय' में लिखा है, ''मैं सतलुज घाटी लांघकर भारत आया था'', उन दिनों कश्मीर से सतलुज तक का मार्ग एक ही था। यही वह समय था, जब कश्मीर भारतीय तंत्र का केंद्र रहा है, अतः बौद्ध मतावलम्बियों द्वारा भारतीय तंत्र को अपनाया जाना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं।
- ओल्डेनबर्ग का मानना है कि बुद्ध से ठीक पहले दार्शनिक चिन्तन निरंकुश सा हो गया था।

द्वितीय प्रश्न–पत्र

1 भारत में यूरोप का प्रवेश

प्रश्न: ***'प्लासी की लड़ाई (1757) एक झड़प थी, जबकि बक्सर की लड़ाई (1764) एक असली युद्ध था'।***

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तर: प्लासी का युद्ध 1757 में सिराजुद्दौला और क्लाइव के बीच हुआ था। इस युद्ध में क्लाइव की जीत हुई और मीर जाफर को बंगाल की गद्दी पर बैठाया गया। प्लासी का युद्ध भारत के निर्णायक युद्धों में से एक था, यद्यपि सैन्य दृष्टि से यह एक मामूली-सी झड़प से अधिक कुछ नहीं था। सैन्य इतिहास में भी इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है।

- इस युद्ध में क्लाइव की विजय नवाब के कर्मचारियों के विश्वासघात का परिणाम थी।
- रॉबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों ने बंगाल के अंतिम स्वतंत्र नवाब सिराजुद्दौला और उनके फ्रांसीसी सहयोगियों की सेना के खिलाफ मोर्चा संभाला।

महत्त्व: यह युद्ध भारत में अंग्रेजों के लिये एक ऐतिहासिक साबित हुआ, क्योंकि इससे बंगाल में अंग्रेजों की राजनीतिक और सैन्य सर्वोच्चता स्थापित हो गई।

- बक्सर का युद्ध 1764 में लड़ा गया था। इस युद्ध में ब्रिटिश सेना के विरुद्ध अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सेना, उसके साथ मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय और बंगाल का नवाब मीर कासिम थे। इस युद्ध में अंततः ब्रिटिश सेना की जीत हुई। बक्सर के युद्ध का महत्त्व निम्नलिखित कारणों से समझा जा सकता है-
- इस युद्ध में अंग्रेजों ने उत्तर भारत के तत्कालीन सबसे शक्तिशाली नवाब को हराया था। अतः अंग्रेजों की यह जीत राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी।
- इस युद्ध के परिणामस्वरूप अंग्रेजों का न केवल बंगाल और बिहार पर अधिकार हो गया, बल्कि उनके लिये दिल्ली तक का मार्ग खुल गया।
- इस युद्ध के बाद ब्रिटिश सेना पर मुगल सम्राट की निर्भरता और अधिक बढ़ गई। अब वह अंग्रेजों से किसी भी प्रकार के समझौते को मानने के लिये विवश था।
- चूंकि मीर कासिम ने शासन में अपनी स्वायत्तता दिखाने का प्रयत्न किया था, इसलिये अंग्रेजों ने युद्ध के पश्चात बंगाल के नवाब के अधिकार बिल्कुल सीमित कर दिये थे।
- इस युद्ध के पश्चात् बंगाल और बिहार की दीवानी अंग्रेजों को मिल गई थी। अंग्रेजों ने बंगाल की लगान-व्यवस्था, उद्योग-धंधों और व्यापार को बहुत हानि पहुंचाई। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से इस युद्ध के नतीजे भारतीयों के लिये और भी घातक सिद्ध हुए।
- बक्सर के युद्ध के बाद हुई 1765 की संधि ने कंपनी को बंगाल का स्वामी ही बना दिया था। इस प्रकार स्पष्ट है कि बक्सर के युद्ध का महत्त्व प्लासी के युद्ध से कहीं अधिक था।

प्रश्न: ***क्या आप स्पष्ट कर सकते हैं कि कैसे दीवानी प्राप्त करने के बाद ईष्ट इंडिया कंपनी की सरकार 'एक भारतीय शासक' की तरह कार्य करती रही?***

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तर: ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी थी, लेकिन उसके पास ढाई लाख सैनिकों की एक फौज थी। जहां व्यापार से लाभ की संभावना नहीं होती, तो वहां सेना उसे संभव बना देती। कंपनी की सेना ने अगले पचास वर्षों में भारत के अधिकांश हिस्से पर कब्जा कर लिया।

- उन क्षेत्रों पर कंपनी को राजस्व देने वाले स्थानीय शासक शासन करने लगे। प्रत्यक्ष रूप से सत्ता स्थानीय शासकों के हाथों में थी, लेकिन राज्य का अधिकांश राजस्व ब्रिटिश तिजोरियों में जाता था। जनता मजबूर थी।
- अगस्त 1765 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुगल बादशाह शाह आलम को हराया। लॉर्ड क्लाइव ने पूर्वी प्रांतों बंगाल, बिहार और उड़ीसा की 'दीवानी' अर्थात् राजस्व वसूलने और जनता को नियंत्रित करने का अधिकार 26 लाख रुपये वार्षिक के बदले हासिल कर लिया।
- इसके बाद भारत कंपनी के शासन के अधीन आ गया। इतिहासकार सैयद हसन रियाज के अनुसार उस दौर में जनता के बीच यह धारणा प्रचलित थी, "दुनिया खुदा की, मुल्क बादशाह का और हुक्म कंपनी बहादुर का।"
- इस तरह, कंपनी लगातार अपने क्षेत्र का विस्तार करती जाती। कंपनी ने मानवीय त्रासदी से भी लाभ उठाया। जो चवाल एक रुपये का 120 सेर मिलता था, वह बंगाल के अकाल के दौरान एक रुपये में केवल तीन सेर मिलने लगा।
- मुगल शासन के अंतर्गत अकाल के दौरान लगान (कर) को कम कर दिया जाता था, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने अकाल के दौरान लगान में वृद्धि की। लोग रोटी के लिए अपने बच्चों को बेचने लगे।

2

भारत में ब्रिटिश प्रसार

प्रश्नः *'अमृतसर की सन्धि (1809) अपने तात्कालिक तथा संभावित प्रभावों के कारण महत्त्वपूर्ण थी'।*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः महाराजा रणजीत सिंह और अंग्रेजों के बीच 25 अप्रैल, 1809 ई. में हुई अमृतसर की संधि का पंजाब के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस संधि के माध्यम से रणजीत सिंह ने सतलुज को राज्य की पूर्वी सीमा के रूप में मान्यता दी। परिणामस्वरूप, रणजीत सिंह का सभी सिख राज्यों का महाराजा बनने का सपना हमेशा के लिए टूट गया।

- रणजीत सिंह को न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक रूप से भी नुकसान उठाना पड़ा। लेकिन इस संधि के द्वारा महाराजा अपने नवगठित राज्य को अंग्रेजों से बचाने में सफल रहे। दूसरी ओर, इस संधि ने अंग्रेजों की लोकप्रियता में काफी वृद्धि की।
- हालांकि संधि की शर्तों ने रणजीत सिंह को सतलुज के दक्षिण में किसी और क्षेत्रीय विस्तार से रोका, लेकिन उन्होंने उसे इसके उत्तर में कार्रवाई की पूर्ण स्वतंत्रता की भी अनुमति दी।
- इसने उन्हें जाटों और अन्य सिखों सहित कम शक्तिशाली सरदारों से निकालने और अंततः पेशावर और कश्मीर जैसे क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल करने में सक्षम बनाया।
- इन क्षेत्रों का एकीकरण, जो उनकी सेनाओं के पश्चिमीकरण द्वारा सहायता प्राप्त था, ने सिख साम्राज्य का गठन किया, जो 1849 में ब्रिटिश अधीनता तक बना रहा।

प्रश्नः ईस्ट इंडिया कंपनी का मानना था कि मीर कासिम के रूप में उन्हें एक आदर्श कठपुतली मिल गई है। हालांकि मीर कासिम कंपनी की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा। समालोचनात्मक विवेचना कीजिए।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2021)

उत्तरः बंगाल के नवाब मीर कासिम ने अपने ससुर मीर जाफर की जगह ली और 1760 से 1763 तक 3 साल की अवधि के लिए शासन किया। ब्रिटिश साम्राज्य ने शुरू में मीर जाफर का समर्थन किया क्योंकि उसने प्लासी के युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की थी। लेकिन जब मीर जफर डचो के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ योजना बनाने लगा तो अंग्रेजों ने उसे हटकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया।

- मीर कासिम का शासनकाल गद्दी पर बैठने पर मीर कासिम ने अंग्रेजों को भव्य उपहारों को दिया। अंग्रेजों को खुश करने के लिए उसने लोगों को लूटा, जमीनों को जब्त किया और शाही खजाने को कम कर दिया जो कभी मीर जाफर द्वारा बनाया गया था। हालाँकि जल्द ही मीर कासिम ब्रिटिश हस्तक्षेप से थक गया और मीर जाफर की तरह ब्रिटिश को हारने के बारे में सोचने लगा।
- उन्होंने अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से वर्तमान बिहार में मुंगेर में स्थानांतरित कर दिया, जहां उन्होंने स्वतंत्र सेना की स्थापना की, कर संग्रह को सुव्यवस्थित करके उन्हें वित्तपोषित किया। उसने अंगर्जों के कर मुक्त व्यापार का विरोध किया। अंग्रेजों द्वारा इन करों का भुगतान करने से इनकार करने से निराश मीर कासिम ने स्थानीय व्यापारियों पर भी कर समाप्त कर दिया। इससे ब्रिटिश व्यापारियों को अब तक जो लाभ मिल रहा था, वह खत्म हो गया और शत्रुता बढ़ गई।
- मीर कासिम ने 1763 में पटना में कंपनी के कार्यालयों पर कब्जा कर लिया, जिसमें रेजिडेंट सहित कई यूरोपीय मारे गए। मीर कासिम ने अवध के शुजाउद्दौला और यात्रा करने वाले मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय के साथ गठबंधन किया, जिसेअंग्रेजों ने भी धमकी दी थी। हालाँकि उनकी संयुक्त सेना 1764 में बक्सर की लड़ाई में हार गई थी। मीर कासिम ने नेपाल के राजा पृथ्वी नारायण शाह के शासनकाल के दौरान भी नेपाल पर हमला किया था।
- वह बुरी तरह से हार गया था क्योंकि नेपाली सैनिकों के पास इलाके, जलवायु और अच्छे नेतृत्व सहित कई फायदे थे। मीर कासिम का छोटा अभियान ब्रिटिश शासन के खिलाफ सीधी लड़ाई के रूप में महत्वपूर्ण था। उससे पहले सिराजुद्दौला के विपरीत मीर कासिम एक प्रभावी और लोकप्रिय शासक था।
- बक्सर की सफलता ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को सात साल पहले प्लासी की लड़ाई और 5 साल पहले बेदारा की लड़ाई की तुलना में बंगाल प्रांत में एक शक्तिशाली ताकत के रूप में स्थापित किया मीर कासिम मुर्शिदाबाद की लड़ाई, घेरैन की लड़ाई और उधवा नाला की लड़ाई के दौरान पराजित हुआ था। मीर कासिम की मृत्यु 8 मई 1777 को दिल्ली के पास गरीबी में हुई।

3

ब्रिटिश राज्य की प्रारंभिक संरचना

प्रश्नः देशी प्रेस अधिनियम (वर्नाक्यूलर प्रेस ऐक्ट), 1878 को देशी प्रेस पर बेहतर नियंत्रण के लिए बनाया गया था जिससे सरकार और अधिक प्रभावी तरीकों से राजद्रोही लेखन को दंडित एवं दमित करने में सशक्त बन सके।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2021)

उत्तरः अंग्रेज सरकार द्वारा भारत में सन् 1878 में देशी प्रेस अधिनियम (VERNACULAR PRESSACT) पारित किया गया ताकि भारतीय भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं पर और कड़ा नियंत्रण रखा जा सके। उस समय लॉर्ड लिट्टन भारत का वाइसराय था।

- इस अधिनियम में पत्र-पत्रिकाओं में ऐसी सामग्री छापने पर कड़ी कार्यवाही का प्रावधान था जिससे जनता में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष पनपने की सम्भावना हो। वस्तुतः यह कानून भाषाई समाचार-पत्रों को दबाने के लिए लाया गया था।
- देशी प्रेस अधिनियम पारित होने के अगले दिन ही कोलकाता से बंगला में प्रकाशित अमृत बाजार पत्रिका ने अपने को 'अंग्रेजी दैनिक' पत्र बना दिया। इसके सम्पादक शिशिर कुमार घोष थे।
- 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट में कहा गया है कि किसी भी मजिस्ट्रेट या पुलिस आयुक्त को किसी भी आपत्तीजनक मुद्रित उत्पाद को जब्त करने का अधिकार था।
- पुलिस ने प्रकाशन से पहले कागजात की सभी प्रूफ शीटों को पुलिस को सौंपने का प्रावधान किया। देशद्रोही खबर पुलिस द्वारा निर्धारित की जानी थी, न कि न्यायपालिका द्वारा।

1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट के तहत, बहुत से कागजात पर जुर्माना लगाया गया और उनके संपादकों को जेल हुई। इस प्रकार, वे पूर्व संयम के अधीन थे। प्रभावित पक्ष अदालत में कानून का निवारण नहीं कर सकता था। भारतीय भाषा के प्रेस में शामिल सामान्य खतरेः

- आंदोलन और हिंसक घटनाएं।
- ब्रिटिश अधिकारियों या व्यक्तियों के खिलाफ झूठे आरोप।
- राज्य के सामान्य कामकाज को परेशान करने के लिए कानून और व्यवस्था को खतरे में डालना।
- आंतरिक स्थिरता के लिए खतरा।

प्रश्नः ''भारत के लिए संघ प्रणाली राजनीतिक विकल्प की तुलना में कहीं अधिक अनिवार्य थी।'' क्या आप इस तर्क से सहमत हैं? (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा, 2016)

उत्तरः भारत में संघीय प्रणाली की शुरूआत 1935 के भारत शासन अधिनियम से हुआ। इस अधिनियम के तहत ब्रिटिश संसद ने वैसी ही परिसंघीय प्रणाली अपनाई जैसी कनाडा में थी। भारत की विविधताओं को देखकर भारत में ऐसी राजनीतिक विकल्प को अपनाने का प्रयास किया जिसमें सभी वर्गों के हितों की रक्षा हो सके। स्वतंत्रता पश्चात भारत के लिए लोकतंत्रीय संसदीय व्यवस्था अपनायी गई तथा इस व्यवस्था के तहत परिसंघीय शासन व्यवस्था को भी अपनाया गया। लेकिन यह परिसंघीय व्यवस्था पूर्व लायी गई परिसंघीय व्यवस्था से पृथक था।

भारत में अंग्रेजों द्वारा लाई गई परिसंघीय व्यवस्था में प्रांतों को प्राधिकार सीधे सम्राट से प्राप्त होता था और वे केंद्रीय नियंत्रण से मोटे तौर पर स्वतंत्र रहते हुए अपनी सीमाओं के भीतर विधायी और कार्यपालिका की शक्तियों का प्रयोग करते थे। परिसंघीय प्रणाली की रचना के लिए यह आवश्यक शर्त है कि परिसंघकारी इकाइयों में आपस में कुछ न कुछ समरसता हो किंतु भारत की स्थिति बिल्कुल भिन्न रही।

प्राचीन समय से ही देशी रियासतें राजनीतिक दृष्टि से अलग रही है। उनमें और शेष भारत का गठन करने वाले प्रांतों में बहुत कम बातें समान थी। 1935 की परिसंघ स्कीम के अधीन भी प्रांतों और देशी रियासतों को भिन्न समझकर व्यवहार किया जाता था। उस प्रणाली में देशी रियासतों का अधिमिलन स्वैच्छिक था जबकि अन्य प्रांतों के लिए अनिवार्य था। वस्तुतः अंग्रेजों द्वारा लाई गई परिसंघीय व्यवस्था में कहीं न कहीं सांप्रदायिक मानसिकता की बू आती थी। क्योंकि इसमें प्रांतों की स्वतंत्रता एवं उसके पृथक अस्तित्व की बात की गई थी। ये स्थिति कैबिनेट मिशन में भी देखने को मिली। अंग्रेजों के इस कार्य प्रणाली से भारत के विभाजन तथा पृथक पाकिस्तान की मांग को बल मिला। अतः भारत में ऐसे राजनीतिक विकल्प की आवश्यकता थी जिसमें ऐसे परिसंघ का निर्माण हो जहां राज्यों का पृथक अस्तित्व न होकर बल्कि सहअस्तित्व की भावना पर आधारित हो। भारत की भौगोलिक विविधताओं को ध्यान में रखकर भारत के संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए ऐसी शासन व्यवस्था अपनाने का कार्य किया जिसमें सबका सह अस्तित्व हो। संविधान निर्माताओं ने राज्यों के अस्तित्व को स्वीकार किया तथा उसको पूर्ण स्वायत्तता प्रदान की। लेकिन यह स्वायत्तता राज्यों को केंद्र से पृथक होने का अधिकार नहीं देती बल्कि आपातकालीन परिस्थिति में केंद्र को राज्यों पर वरियता देने का कार्य किया। अतः हम कह सकते हैं कि भारत में संघीय शासन किसी भी राजनीति विकल्प की तुलना में ज्यादा सार्थक है।

4 ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव

प्रश्नः *'अकाल केवल अनाज की कमी ही नहीं, बल्कि औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के प्रत्यक्ष परिणाम थे'।*
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः सन् 1765 से 1947 तक का कालखण्ड ब्रिटिश राज के दौरान भारत में पड़ने वाले प्रमुख अकालों की समयसरेखा है। इसमें वे सभी अकाल शामिल हैं, जो इस कालखंड में भारतीय उपमहाद्वीप में घटित हुए; जैसे, रियासतें (भारतीय शासकों द्वारा प्रशासित क्षेत्र), ब्रिटिश भारत के वे क्षेत्र जिन पर या तो 1765 से 1857 तक ईस्ट इंडिया कंपनी ने या फिर 1858 से 1947 तक ब्रिटिश राज में ब्रिटिश क्राउन ने राज किया और मराठा साम्राज्य जैसे ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र भारतीय क्षेत्र।

- वर्ष 1765 को इसलिए प्रारंभिक वर्ष के रूप में चुना गया है, क्योंकि उस वर्ष ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बक्सर की लड़ाई में उसकी जीत के बाद बंगाल क्षेत्र की दीवानी (भूमि राजस्व के अधिकार) प्राप्त हुई थी। हालांकि कंपनी ने 1784 तक बंगाल पर सीधे तौर से राज नहीं किया, जब इसे निजामत (कानून व्यवस्था पर नियंत्रण) प्राप्त हुई।
- 18वीं सदी के अंत तक भारत का काफी बड़ा हिस्सा ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्यक्ष शासन या अप्रत्यक्ष प्रभाव के अधीन आ चुका था। जैसे-जैसे भारत में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ता गया, अकाल की घटनाएं भी बढ़ने लगीं, "पहले कंपनी राज में और फिर ब्रिटिश राज में। वास्तव में, भारत पर ब्रिटिश शासन 1770 में बंगाल में अकाल के साथ शुरू हुआ और 1943 में बंगाल में अकाल के साथ खत्म हुआ।"
- भारत में ब्रिटिश शासन की एक प्रमुख विशेषता और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का शुद्ध परिणाम, इसके लोगों में अत्यधिक गरीबी का प्रचलन था। जबकि इतिहासकार इस सवाल पर असहमत हैं कि भारत ब्रिटिश शासन के तहत गरीब हो रहा था या नहीं। इस बात पर कोई असहमति नहीं है कि ब्रिटिश शासन की अवधि में ज्यादातर भारतीय हमेशा भुखमरी के कगार पर रहते थे।
- लोगों की गरीबी ने अकाल की एक शृंखला में अपनी परिणति पाई, जिसने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत के सभी हिस्सों को तबाह कर दिया था। इन अकालों में से पहला पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 1860-61 में हुआ और इसमें 2 लाख से अधिक लोगों की जान चली गई। 1865-66 में आये भीषण अकाल ने उड़ीसा, बंगाल, बिहार और मद्रास को घेर लिया और लगभग 20 लाख लोगों की जान ले ली, सिर्फ उड़ीसा में 10 लाख के करीब लोगों की जान चली गई। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, बॉम्बे और पंजाब में 1868-70 के अकाल में 14 लाख से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। एक अन्य प्रभावित क्षेत्र राजपुताना में कई राज्यों ने अपनी आबादी का एक-चौथाई हिस्सा खो दिया।
- भारतीय इतिहास में शायद सबसे खराब अकाल 1876-78 में मद्रास, मैसूर, हैदराबाद, महाराष्ट्र, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और पंजाब में हुआ। महाराष्ट्र में 8 लाख, मद्रास में लगभग 35 लाख लोग मारे गए। मैसूर ने अपनी आबादी का लगभग 20 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश में 12 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई।
- 1896-97 में सूखे के कारण देश भर में अकाल पड़ा, जिसमें 9।5 करोड़ लोग प्रभावित हुए, जिनमें से लगभग 45 लाख लोगों की मृत्यु हो गई। 1899-1900 के अकाल के कारण व्यापक संकट पैदा किया। अकाल राहत के प्रावधान के माध्यम से जान बचाने के आधिकारिक प्रयासों के बावजूद, 25 लाख से अधिक लोगों की मौत हो गई।
- इन प्रमुख अकालों के अलावा, कई अन्य स्थानीय अकाल और बिखराव हुए। एक ब्रिटिश लेखक, विलियम डिग्बी ने गणना की है कि 1854 से 1901 के दौरान 2,8825,000 से अधिक लोग अकाल के दौरान मारे गए। 1943 में एक और अकाल ने बंगाल में लगभग 30 लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया।

निष्कर्ष

ब्रिटेन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अपनी अर्थव्यवस्था के अधीन कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप गरीबी, बीमारी, भुखमरी और अकाल की स्थिति पैदा हुई।

प्रश्नः *व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार स्थायी बंदोबस्त ने बंगाल में एक संपत्ति नियम प्रारंभ किया तथा इसके क्या परिणाम थे?* **(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)**

उत्तरः भारत में ब्रिटिश राज के सफल होने के पीछे उनके द्वारा लागू की गई भू-राजस्व नीतियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। स्थायी रूप से राजस्व की प्राप्ति और भू-स्वामियों का निष्ठावान वर्ग आदि कारकों ने ही ब्रिटिश सत्ता को सुदृढ़ किया।

5

सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास

प्रश्नः *क्या पश्चिमी शिक्षा सांस्कृतिक जागृति की अग्रदूत थी या औपनिवेशिक प्रभुत्व का एक उदाहरण था? व्याख्या कीजिए।*
(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः भारत में ब्रिटिश शिक्षा की शुरुआत 18वीं शताब्दी में कुछ चैरिटी स्कूलों द्वारा कलकत्ता, मद्रास तथा मुम्बई में यूरोपीय तथा एंग्लो-इंडियन बच्चों की शिक्षा द्वारा हुई। हालांकि ईस्ट इंडिया कंपनी ने कई तरीकों से इन स्कूलों को सहयोग दिया, किंतु भारतीयों ने अंग्रेजी पढ़ने में कोई रुचि नहीं दिखलाई।

- इसकी शुरुआत अंततः 1813 में चार्टर एक्ट द्वारा हुई। इस एक्ट ने मिशनरियों को पूरे भारत में यात्रा करने की अनुमति दी। उन मिशनरियों का उद्देश्य भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रचार तथा अंग्रेजी के माध्यम से ईसाइयत का प्रचार-प्रसार था।
- भारत में जिस शिक्षा पर कंपनी पैसा खर्च कर रही थी, उसके माध्यम को लेकर विवाद प्रारंभ हो गया। प्राचीन विद्वानों तथा ब्रिटिश व्यवस्था के समर्थकों के बीच तमाम बहसें हुई। अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में माहौल तब बनना प्रारंभ हुआ, जब बेनटिंक ने गर्वनर जनरल का पदभार संभाला (1828)।
- सन 1834 में टी. बी. मैकाले उसकी सलाहकार समिति में कानूनी सदस्य के रूप में सम्मिलित हुआ। मैकॉले अंग्रेजी शिक्षा का महान पक्षधर था।
- वह जन निर्देशों की सामान्य समिति का अध्यक्ष बनाया गया। ब्रिटिश आधारित शिक्षा के समर्थक अथवा ब्रिटिश विद, मैकॉले के नेतृत्व में विजयी सिद्ध हए। मैकाले ने भारतीय शिक्षा पर अपना प्रपत्र फरवरी, सन 1835 में जारी किया।
- यह संदेश भारत में अंग्रेजी शिक्षा का पथप्रदर्शक सिद्धांत बन गया। सरकार ने संकल्प लिया कि भविष्य में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से यूरोपीय साहित्य तथा विज्ञान का प्रचार-प्रसार उसका उद्देश्य होगा। भविष्य में कंपनी द्वारा खर्च किया गया कोष इसी उद्देश्य के लिए प्रयुक्त होगा। इस कदम का अर्थ यह हुआ कि अब भारत में अंग्रेजी शिक्षा पश्चिमी ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गई थी।
- मैकॉले का स्पष्ट मानना था कि भारत में अंग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग का निर्माण करेगी, जो कि 'शक्ल सूरत से तो पूरी तरह भारतीय होगा, किंतु स्वभाव में अंग्रेज'।
- यह उम्मीद जताई गई कि यह वर्ग भारत में ब्रिटिश राज का सुदृढ़ स्तंभ बनेगा। यह समझा गया कि अंग्रेजी माध्यम से प्रशिक्षित ये भारतीय पश्चिमी नीतियां तथा नैतिकता सीखेंगे, जब औपनिवेशिक ढांचे के साथ जुड़ने की बात आएगी तो ये भारतीय भारत में ब्रिटिश शासन को मजबूत करेंगे। यह डाउनवर्ड फिल्ट्रशन सिद्धांत था।
- यह शिक्षा जन सामान्य के लिए न होकर पढ़े लिखे तथा कुलीन वर्ग के लिए थी। इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना गया कि इन कुलीन भारतीयों के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षा नीति जन साधारण में फैलेगी।
- इन प्रशिक्षित भारतीयों ने जब शिक्षकों का कार्य किया तो क्षेत्रीय भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा का स्वतः ह्रास होने लगा। मैकॉले को यकीन था कि सीमित कोष से वह जन साधारण को ब्रिटिश में शिक्षित नहीं कर पाएगा। इससे बेहतर यह था कि ये मुट्ठी भर भारतीय अंग्रेज भाषांतरकारों का काम करते।
- यह वर्ग स्थानीय भाषा तथा साहित्य को समृद्ध कर पश्चिमी विज्ञान तथा साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने में मदद करेगा।
- यह ब्रिटिश शासकों को बहुत ही कम खर्च पर पश्चिमी सभ्यता को जन-जन तक फैलाने में मदद की। इस सिद्धांत ने ब्रिटिश अफसरशाही में भारतीयों को अधीनस्थ पदों जैसे कि क्लर्क आदि बनने के योग्य बनाया।

वुड योजना :

19वीं शताब्दी में भारत में शिक्षा, विशेषकर अंग्रेजी शिक्षा के विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा था राज्य सचिव चार्ल्स वुड द्वारा तैयार किया गया दिशा-निर्देश।

यह सन 1854 में जारी किया गया तथा वुड घोषणा पत्र के नाम से जाना गया। इस विस्तृत योजना ने 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया। इसने यूरोपीय शिक्षा को भारतीय नक्शे पर पूर्णतः स्थापित कर दिया।

हंटर कमीशन

शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की समीक्षा करने के लिए हंटर कमीशन मुख्यतः प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा पर ही केन्द्रित था। हंटर कमीशन ने ढेर सारी संस्तुतियां की। उसने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष बल दिया, जिसका नियंत्रण जिला तथा नगरपालिका बोर्ड को स्थानांतरित करने की बात कही गई।

6 बंगाल एवं अन्य क्षेत्रों में सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन

प्रश्नः *भारतीय समाज पर अंग्रेजी शासन का विभेदीय प्रभाव पड़ा। वर्णन कीजिए कि सन 1857 के विद्रोह का भारतीयों ने किन तरीकों से जवाब दिया?*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः 1857 के विद्रोह के बाद भारतीय और ब्रिटिश बुद्धिजीवियों के बीच वैचारिक युद्ध शुरू हुआ, जिसका जवाब भारतीय इतिहासकारों ने बहुत ही तार्किक और संगठित तरीके से दिया। वीडी सावरकर इस विद्रोह को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ संगठित प्रतिरोध की पहली अभिव्यक्ति कहा। यह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के सिपाहियों के विद्रोह के रूप में शुरू हुआ, लेकिन जनता की भागीदारी भी इसने हासिल कर ली।

- विद्रोह को कई नामों से जाना जाता है: सिपाही विद्रोह (ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा), भारतीय विद्रोह, महान विद्रोह (भारतीय इतिहासकारों द्वारा), 1857 का विद्रोह, भारतीय विद्रोह और स्वतंत्रता का पहला युद्ध (विनायक दामोदर सावरकर द्वारा)।
- ब्रिटिश शासन समाप्त हो जाने के बाद दिल्ली, लखनऊ और कानपुर जैसे स्थानों पर विद्रोहियों ने एक प्रकार की सत्ता और शासन संरचना स्थापित करने का प्रयास किया। बेशक यह प्रयोग ज़्यादा समय तक नहीं चला, लेकिन इन कोशिशों से पता चलता है कि विद्रोही नेता अठारहवीं सदी की पूर्व-ब्रिटिश दुनिया को पुनर्स्थापित करना चाहते थे।
- इन नेताओं ने पुरानी दरबारी संस्कृति का सहारा लिया। विभिन्न पदों पर नियुक्तियां की गईं। भूराजस्व वसूली और सैनिकों के वेतन के भुगतान का इंतज़ाम किया गया। लूटपाट बंद करने के लिए हुक्मनामे जारी किए गए।
- इसके साथ-साथ अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ युद्ध जारी रखने की योजनाएं भी बनाई गई। सेना की कमान शृंखला तय की गई। इन सारे प्रयासों में विद्रोही अठारहवीं सदी के मुगल जगत से ही प्रेरणा ले रहे थे; यह जगत उन तमाम चीज़ों का प्रतीक बन गया, जो उनसे छिन चुकी थीं।
- विद्रोहियों द्वारा स्थापित शासन संरचना का प्राथमिक उद्देश्य युद्ध की ज़रूरतों को पूरा करना था। लेकिन ज़्यादातर मामलों में ये संरचनाएं अंग्रेज़ों की मार बरदाश्त नहीं कर पाईं। अवध में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ प्रतिरोध सबसे लंबा चला।
- वहां लखनऊ दरबार द्वारा जवाबी हमले की योजनाएं बनाई जा रही थीं और 1857 के आखिर तथा 1858 के शुरुआती महीनों तक हुकुम की श्रेणियां वजूद में थीं।

राष्ट्रवादी दृश्य कल्पना

- बीसवीं सदी में राष्ट्रवादी आंदोलन को 1857 के घटनाक्रम से प्रेरणा मिल रही थी। इस विद्रोह के इर्द-गिर्द राष्ट्रवादी कल्पना का एक विस्तृत दृश्य जगत बुन दिया गया था।
- इसको प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में याद किया जाता था जिसमें देश के हर तबके के लोगों ने साम्राज्यवादी शासन के ख़िलाफ़ मिलकर लड़ाई लड़ी थी।
- इतिहास लेखन की तरह कला और साहित्य ने भी 1857 की स्मृति को जीवित रखने में योगदान दिया। विद्रोह के नेताओं को ऐसे नायकों के रूप में पेश किया जाता था, जो देश को रणस्थल की तरफ़ ले जा रहे हैं। उन्हें लोगों को दमनकारी साम्राज्यवादी शासन के ख़िलाफ़ उत्तेजित करते चित्रित किया जाता था।
- एक हाथ में घोड़े की लगाम और दूसरे हाथ में तलवार थामे अपनी मातृभूमि की मुक्ति के लिए लड़ाई लड़ने वाली रानी के शौर्य का गौरवगान करते हुए कविताएं लिखी गईं।

निष्कर्ष

भले ही 1857 के विद्रोह का दमन अंग्रेजों द्वारा कर दिया गया, लेकिन इसका प्रभाव देश में व्यापक स्तर पर पड़ा। इसने समाज के अधिकांश वर्ग के लोगों में अंग्रेजी शासन के खिलाफ आक्रोश भड़ दिया। इस आन्दोलन ने देश में आजादी की पहली अलख जला दी थी।

प्रश्नः 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में अनेकों स्त्री संगठन अस्तित्व में आए जिन्होंने जन क्षेत्र में बहुत सक्रियता से कार्य किया तथा अपना ध्यान अधिक प्रत्यक्षता से स्त्रियों के राजनीतिक तथा कानूनी अधिकारों पर केंद्रित किया।

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2020)

प्रश्न की मांगः बीसवीं सदी में स्त्री संगठनों के केंद्रित मुद्दों पर विचार करना है।

उत्तरः परिचयः बीसवीं सदी में अनेक स्त्री संगठनों का गठन हुआ। इस दौरान स्त्री शिक्षा, उन्नत स्वास्थ्य और प्रसूति सेवाएं, वोट का अधिकार सहित विभिन्न मुद्दों पर स्त्री संगठनों ने ध्यान केंद्रित किया था।

7 ब्रिटिश शासन के प्रति भारत की अनुक्रिया

प्रश्नः *'बाहरी तत्त्वों की धुसपैठ, जिन्हें संथाल दिकू कहते थे, ने संथालों के ज्ञात संसार को पूरी तरह बर्बाद कर दिया तथा उन्हें अपना खोया क्षेत्र प्राप्त करने के लिये कार्यवाही करने पर मजबूर कर दिया'।* (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः संथाल विद्रोह 30 जून, 1855 को आरम्भ हुआ था। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सैन्य कानून लगा दिया, जो 3 जनवरी, 1856 तक चला। इस विद्रोह का केंद्र भागलपुर से लेकर राजमहल की पहाड़ियों तक था। इस विद्रोह का मूल कारण अंग्रेजों के द्वारा जमींदारी व्यवस्था तथा साहूकारों एवं महाजनों के द्वारा शोषण एवं अत्याचार था। इस विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव ने किया था।

- इनके नेतृत्व में यह घोषणा हुई कि बाहरी लोगों को भगाने और विदेशियों का राज्य समाप्त कर सतयुग का राज स्थापित करने के लिए विद्रोह किया जाए।
- यह विद्रोह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक ख़ हर तरह के शोषण के खिलाफ और जल-जंगल-जमीन की रक्षा व समानता पर आधारित समाज के निर्माण के लिए हुआ।
- 1855 का एक संगठित युद्ध था, जो अन्य स्थानीय समुदायों के सहयोग के बिना संचालित नहीं किया जा सकता था। इस युद्ध में विशेष रूप से कारीगरों और अन्य खेतिहर समुदायों का पूरा सहयोग था। सिद्धू-कान्हू की हत्या के दस वर्ष बाद, यानी 1865 तक, यह रुक-रुककर चलता रहा।
- सिद्धू-कान्हू की हत्या के बाद कुछ महीनों तक यह शिथिल रहा। जाहिर है कि इतने लंबे समय तक चला यह युद्ध बिना व्यापक तैयारी और योजना के नहीं चलाया जा सकता था। दूसरी तरफ अंग्रेज कंपनी के विरोध में इस युद्ध के लिए जितने संसाधनों जरूरत थी, उसे अकेले संथालों द्वारा जुटा पाना असंभव था।
- अगर पारंपरिक हथियारों तीर-धनुष, टांगा, बलुआ आदि की हम बात करें तो वह लुहारों के सहयोग के बिना जुटा पाना संभव नहीं था। वैसे भी ये जातियां भी संथालों की ही तरह ब्रिटिश कंपनी की नीतियों और सामंतों, महाजनों, साहूकारों व व्यापारियों से पीड़ित थीं।

निष्कर्ष

अतः 30 जून, 1855 को जब सिद्धू ने खुद को "सूबा ठाकुर" (क्षेत्र का सर्वोच्च शासक) घोषित किया और अंग्रेजों को इलाका छोड़ने का "फरमान" जारी किया, तो उनके साथ उत्पीड़ित होने वाले गैर-आदिवासी समूह भी गोलबंद हो गए।

प्रश्नः ''कोल विद्रोह मुख्यतः छोटानागपुर के जनजातीय निवासियों का गैर-जनजातीय अधिवासियों एवं सेवारत-व्यक्तियों के विरुद्ध युद्ध था।'' (सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2019)

उत्तरः (I) 1891 ई. में छोटानागपुर क्षेत्र में हुए यह विद्रोह भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण विद्रोह था। वास्तव में यह मुंडों का विद्रोह था, जिसमें हो, उरांव एवं अन्य जनजाति के लोग शामिल थे।

इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि संबंधी असंतोष था। यहां के जमींदार इन्हीं लोगों के जमीन से अनाप-शनाप कर वसूला करते थे, जिससे वहां के निवासी 'कोलो' का असंतोष बढ़ने लगा। कोल विद्रोह का तात्कालिक कारण छोटानागपुर के महाराज भाई हरनाथ शाही द्वारा इनकी जमीनों को छीन कर अपने लोगों में बांट देना। इस विद्रोह के प्रमुख नेता बुद्धो भगत, बिन्दराय, सिंगराय एवं सुर्गा मुंडा थे। (II) औपनिवेशिक सत्ता ने कई प्रकार से भारत के आदिवासियों के जीवन को प्रभावित किया। आदिवासी क्षेत्रों में बाहरी लोगों और औपनिवेशिक सत्ता की घुसपैठ ने उनकी पूरी सामाजिक व्यवस्था को ही उलट-पलट दिया। उनकी जमीन उनके हाथ से निकलती गई और वे धीरे-धीरे किसान से खेत मजदूर बनते चले गए। जंगलों से उनके गहरे संबंध को भी औपनिवेशिक हमले ने तोड़ दिया। औपनिवेशिक शासन ने जनजातीय समाज पर प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया। इसके कारण बिहार के जनजातीय क्षेत्रों में भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध कई चुनौतियां संगठित हुई। ब्रिटिश सत्ता का विस्तार दक्षिण बिहार (अब झारखंड में) के जनजातीय क्षेत्र में 1765 के बाद प्रारंभ हुआ, जिसके कारण गैर जनजातीय लोगों द्वारा इस क्षेत्र में आने और बसने से स्थानीय आबादी प्रभावित हुई। भूमि के हस्तांतरण, साहूकारों के आर्थिक शोषण, सामाजिक जीवन में आ रहे विरोध की भावना जगी।

जनजातियों ने एक के बाद एक कई विद्रोहों के द्वारा अपने शौर्य, बलिदान एवं राष्ट्र प्रेम का परिचय दिया और समय-समय पर ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिलाती रही। भारत में जनजातीय आंदोलन को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला, 1750 से 1857 तक औपनिवेशिक शासन के प्रति हुए जनजातीय विद्रोह एवं दूसरा, 1857 से भारत की स्वतंत्रता तक हुए जनजातीय विद्रोह।

8 भारतीय राष्ट्रवाद के जन्म के कारक

प्रश्नः *क्या आप समझते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एक 'बहुवर्गीय आन्दोलन' था, जिसमें सभी वर्गों तथा स्तरों के साम्राज्यवाद-विरोधी हितों का प्रतिनिधित्व था? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उत्तरः 1857 में हुए गदर को जिसे आजादी की पहली लड़ाई कहा जाता है, से लेकर देश के आजाद होने तक के 90 वर्ष के दौर को राष्ट्रीय आंदोलन कहा जाता है। 10 मई, 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों ने अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का बिगुल फूंक दिया। धीरे-धीरे यह क्रांति मेरठ से शुरू होकर हिंदुस्तान के कई हिस्सों में फैल गई। विद्रोहियों ने बहादुर शाह जफर को अपना बादशाह घोषित कर दिया। लेकिन अंग्रेज परस्त लोगों के धोखे की वजह से यह महाक्रांति विफल हो गई।

- 1858 में भारत का शासन पूरे तरीके से ब्रिटिश महारानी के हाथों में चला गया। 1859 में बंगाल के नदिया जिले में नील की खेती करने वाले किसानों ने अहिंसक आंदोलन करके दूसरे आंदोलन का आगाज किया। इसके बाद देशभर में अंग्रेजों के खिलाफ कई आंदोलन हुए। लेकिन बांटो और राज करो की नीति चलाने में अंग्रेज अब दक्ष हो चले थे।
- वे भारत में बढ़ती राष्ट्रवाद की भावना और राजनीतिक चेतना को किसी भी तरह दबाने में जुट गए। इस बीच 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। आम जनमानस यहां तक कि जंगलों में रहने वाले आदिवासियों में भी अंग्रेजों के खिलाफ रोष बढ़ रहा था।
- लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल, फिरोज शाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले आदि नेताओं ने भारत की आजादी की आवाज उठाई। भारत की आजादी की लड़ाई में एक नया मोड़ तब आया, जब जनवरी 1915 को महात्मा गांधी भारत लौटे।
- 1917 में गांधीजी चम्पारण आंदोलन, खेड़ा और अहमदाबाद मिल जैसे आंदोलनों में शरीक हुए एवं इस तरह उन्होंने भारतीय जनमानस में अपनी जगह बना ली। सन 1919 में जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद सितम्बर 1920 में असहयोग आंदोलन और खिलाफत आंदोलन का आगाज हुआ।
- इस दौरान चौरी चौरा में आंदोलनकरियों के हिंसक रवैये को देखते हुए गांधीजी ने 5 फरवरी, 1922 में असहयोग आंदोलन वापस ले लिया। असहयोग आंदोलन के बाद क्रांतिकारियों जैसे आजाद, भगत सिंह, सूर्य सेन आदि ने हिंसा का रास्ता आजादी की लड़ाई लड़ी।
- इसी समय मार्च 1929 के लाहौर अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आंदोलन का निर्णय लिया गया। 6 अप्रैल, 1930 में गांधीजी ने दांडी में मुट्ठी भर नमक उठाकर इस आंदोलन की शुरुआत कर दी। यह दशक ऐसा रहा, जिसमें ब्रिटिश हुकूमत को भारतीय जनमानस का विरोध कई रूपों में और कई बार देखना पड़ा।
- यह दशक ऐसा भी रहा कि मुस्लिम लीग पर गांधी की बातों का प्रभाव होना बंद हो गया। मुस्लिम लीग के नेताओं के भीतर दो राष्ट्र की धारणा प्रबल हो रही थी। अगस्त 1942 का साल देश के इतिहास में लोगों के ब्रितानी हुकूमत के खिलाफ गुस्से का इजहार करने की महज तारीख ही, नहीं है यह ऐसी तारीख है, जब भारत में अंग्रेजी सरकार के खात्मे की शुरुआत हुई।
- सुभाष चंद्र बोस ने जापान कि मदद से आजाद हिन्द फौज का गठन किया, और इस तरह आजादी की लड़ाई में आम आदमी के साथ-साथ एक फौज भी खड़ी हो गई।

निष्कर्षः

इन दिनों आजादी के दीवाने अपने-अपने तरीकों से आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे, लेकिन अब आजादी के साथ एक नया संघर्ष करवट ले रहा था। ये था देश के बंटवारे का मसला। जिन्ना का कथन था कि पहले बंटवारा और फिर आजादी। माउन्टबेटन के भारत पहुंचने के साथ ही कैबिनेट मिशन और तमाम पुरानी योजनाओं को दरकिनार करते हुए माउन्टबेटन ने भारत के आजादी और बंटवारे का मसौदा तैयार कर लिया, जिसमें 15 अगस्त, 1947 तक सत्ता हस्तांतरण शामिल था। भारत ने विभाजन को स्वीकार करते हुए अपनी आजादी प्राप्त की।

प्रश्नः *आरंभिक राष्ट्रवादियों (नरमपंथियों) की नीतियों तथा कार्यक्रमों की व्याख्या कीजिए। वे किस सीमा तक लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति करने में सक्षम थे?*

(सिविल सेवा मुख्य परीक्षा 2022)

उतरः कांग्रेस के आरम्भिक 20 वर्षों के काल को "उदारवादी राष्ट्रीयता" की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि इस काल में कांग्रेस कीं नीतियां